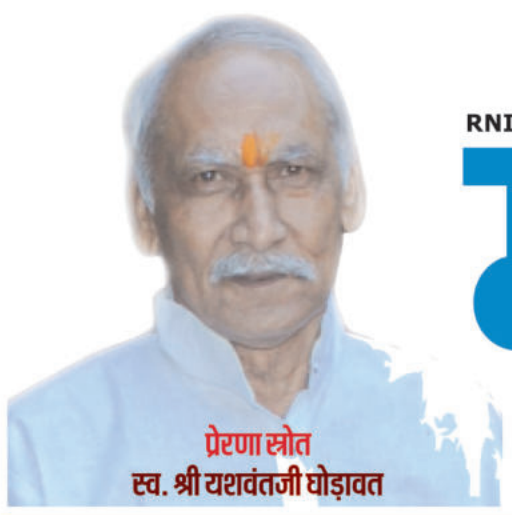

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

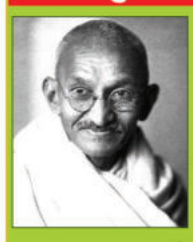

सत्य बिना जन समर्थन के भी खड़ा रहता है। वह आत्मनिर्भर है।

महात्मा गांधी

वर्ष-06, अंक - 34 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 16 मई 2024 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

इंडिया गठबंधन का पीएम चेहरा हैं राहुल गांधी...?

रायबरेली।

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बुधवार को संकेत दिया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी विपक्षी इंडिया गठबंधन के प्रधानमंत्री पद का चेहरा हैं। उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र में राहुल गांधी के लिए वोट मांगते हुए बघेल ने कहा कि, यहां के लोग देश के प्रधानमंत्री का चुनाव करने जा रहे हैं। उन्होंने पूर्व पीएम इंदिरा गांधी का हवाला देते हुए कहा कि राहुल गांधी भी अगले पीएम हैं। बघेल के दावे पर यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव का बयान भी सामने आया है। समाजवादी पार्टी (सपा) सुप्रीमो ने इसे विपक्षी गठबंधन की रणनीति करार दिया है।

दरअसल, रायबरेली के बथुवा खास गांव में एक सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए भूपेश बघेल ने कहा, इंदिरा गांधी के बाद, अब, लोगों के पास इस निर्वाचन क्षेत्र से एक और पीएम चुनने का मौका है। लोग इसके गवाह बनेंगे और इसमें योगदान देंगे। उन्होंने सभा का वीडियो शेयर करते हुए लिखा, रायबरेली के लोग सिर्फ़ लोकसभा सदस्य नहीं चुन रहे हैं, बल्कि स्व. इंदिरा गांधी जी के

बाद अब रायबरेली के लोग देश का प्रधानमंत्री चुनने जा रहे हैं। राहुल गांधी पहली बार रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। वह 2004 से 2019 तक अमेठी से लोकसभा सदस्य रहे। वर्तमान में वह केरल के वायनाड से सांसद हैं। अमेठी और रायबरेली में 20 मई को मतदान होना है।

कांग्रेस नेता के बड़े दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए समाजवादी पार्टी सुप्रीमो अखिलेश यादव ने कहा कि यह बयान इंडिया गठबंधन की 'रणनीति' का हिस्सा था। उन्होंने कहा, मैं कुछ भी खुलासा नहीं करूंगा। यह हमारी रणनीति का हिस्सा है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के तहत मिलकर लोकसभा चुनाव लड़ रही हैं। अब तक, लोकसभा चुनाव जीतने के बाद गठबंधन की सरकार बनने पर इंडिया ब्लॉक ने प्रधानमंत्री पद के लिए अपनी पसंद की घोषणा नहीं की है। राहुल गांधी ने पहले कहा था कि विपक्ष का गठबंधन आम चुनाव जीतने के बाद अपने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार पर फैसला करेगा।

इस बीच समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने कार्यकर्ताओं को हिदायत दी है कि उत्तर प्रदेश में जिन लोकसभा सीटों पर सहयोगी कांग्रेस चुनाव लड़ रही है वहां वो यह मानकर पूरी ताकत लगाएं कि अपनी पार्टी का उम्मीदवार ही चुनावी मैदान में हैं। उनकी यह हिदायत रायबरेली और अमेठी में जमीनी स्तर पर काम करती नजर आ रही है क्योंकि कांग्रेस के चुनावी कार्यक्रमों में लाल टोपी पहने सपा समर्थक बड़ी संख्या में मौजूद रहते हैं।

मोहन सरकार का पहला बजट जुलाई में, तैयारी में जुटे विभाग

भोपाल।

डॉ. मोहन यादव सरकार का पहला पूर्ण बजट जुलाई में प्रस्तुत होगा। वित्त के साथ-साथ अन्य विभाग भी इसकी तैयार में जुट गए हैं। सभी से मई के अंत तक प्रस्ताव भेजने के लिए कहा गया है। इस बार बजट सवा तीन लाख करोड़ रुपये से अधिक का हो सकता है। इसमें कर्मचारियों को 56 प्रतिशत की दर से महंगाई भत्ता देने, तीन प्रतिशत वेतन में वृद्धि, संविदा कर्मचारियों के पारिश्रमिक में आठ प्रतिशत की वृद्धि के हिसाब से प्रविधान रखे जाएंगे। केंद्र सरकार की सभी योजनाओं के लिए प्राथमिकता के आधार पर अंशदान विभागों को रखना होगा।

लोकसभा चुनाव के कारण सरकार ने पूर्ण बजट प्रस्तुत न करके एक लाख 45 हजार करोड रुपए का लेखानुदान प्रस्तुत किया था। जुलाई 2024 तक के लिए यह व्यवस्था की गई है। इसमें किसी तरह कर संबंधी नए प्रस्ताव तथा व्यय के नए मद सम्मिलित नहीं किए। द्वितीय अनुपूरक बजट में कुछ नई योजनाएं शामिल कर ली गई थीं। अब विभागों ने बजट की तैयारी प्रारंभ की है।

वित्त विभाग ने सभी विभागों से कहा कि, आवश्यक व्यय के प्रविधान प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित किए जाएं। केंद्र सरकार के अनुसार महंगाई भत्ता और राहत के लिए बजट स्थापना व्यय में रखें। इसकी गणना ठीक से कराएं ताकि कोई समस्या न आए। केंद्र सरकार की सभी योजनाओं के लिए राज्यांश पर्याप्त मात्रा में रहे। अधोसंरचना विकास के कार्य मध्य प्रदेश सरकार की प्राथमिकता में हैं, इसलिए उनके प्रस्ताव समय से भेजें ताकि आवश्यक राशि का प्रविधान किया जा सके।

प्रशासकीय स्वीकृति की बाद भी भेजें नई योजनाएं

वित्त विभाग ने सभी विभागों से कहा है कि, वे नई योजनाओं के प्रस्ताव प्रशासकीय स्वीकृति के बाद ही भेजें। इसमें उसका औचित्य और क्या लाभ होगा, उसका विवरण अवश्य दें। यदि कोई ऐसी योजना, जो केंद्र सरकार द्वारा भी संचालित की जा रही है तो उसके संविलियन का प्रस्ताव दें। जिन योजनाओं के लक्ष्य पूर्ण हो चुके हैं, उन्हें बंद करने की प्रक्रिया करें।

अनुसूचित जाति-जनजाति उपयोजना के लिए पर्याप्त रखें राशि

विभागों से कहा गया है कि, अनुसूचित जाति उपयोजना के लिए 16 और अनुसूचित जनजाति उप योजना के लिए 23 प्रतिशत के हिसाब से राशि रखी जाए।

ईद के दिन मेरे घर नहीं बनता था खाना- पीएम मोदी

नई दिल्ली।

लोकसभा चुनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बचपन के दिनों को याद करते हुए कुछ राज खोले हैं। उन्होंने बताया है कि ईद के दिन उनके घर पर खाना नहीं बनता था और आसपास रहने वाले मुस्लिम परिवारवालों के घरों से खाना आता था। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मेरे घर के अगल-बगल सारे मुस्लिम परिवार रहते हैं। मेरे घर में ईद समेत तमाम त्योहार होते थे। ईद के दिन मेरे घर में खुद का खाना नहीं पकता था, सारे मुस्लिम परिवारों से खाना आ जाता था। जब मुहर्रम निकलता था, तब ताजिया के नीचे से निकलते थे।

पिछले दिनों रैली में घुसपैठिया बोलने पर पीएम मोदी ने जवाब दिया कि किसने कहा जब ज्यादा बच्चों की बात होती है तो मुस्लिमों का नाम जोड़ देते हैं। मुस्लिमों के साथ क्यों अन्याय करते हैं। हमारे यहां गरीब परिवारों में भी यही हाल है। किसी भी समाज के हो, गरीबी जहां है, वहां ज्यादा बच्चे होते हैं। मैंने न हिंदू कहां

और न ही मुस्लिम कहा। क्या पीएम मोदी को मुस्लिम वोटों की चाहत है...? इस पर उन्होंने कहा कि मैं मानता हूं कि मेरे देश के लोग मुझे वोट देंगे। जिस दिन मैं हिंदू-मुस्लिम करूंगा, उस दिन सार्वजनिक जीवन में रहने योग्य नहीं हूंगा। मैं हिंदू-मुसलमान नहीं करूंगा, ये मेरा संकल्प है।

वहीं, बुधवार को महाराष्ट्र के पिंपलगांव बसवंत में चुनावी रैली में को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि आपकी सेवा करना ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। कांग्रेस इतनी बुरी तरह हारने जा रही है कि उसके लिए (लोकसभा में) विपक्ष का दर्जा पाना भी मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि मैं तीसरे कार्यकाल के लिए आपका आशीर्वाद मांगने आया हूं। कांग्रेस मंदिर पर कुछ भी बोल रही है लेकिन 'डुप्लिकेट' शिवसेना चुप है; उनकी पाप में भागीदारी है। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि कांग्रेस की सोच है कि देश के बजट का 15 फीसदी अल्पसंख्यकों पर खर्च किया जाए। धार्मिक आधार पर बजट का बंटवारा खतरनाक है। कांग्रेस के लिए अल्पसंख्यक का मतलब उसका प्रिय वोट बैंक है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर धर्म-आधारित आरक्षण के खिलाफ थे।

रशिया की तरह विपक्षी नेताओं की हत्या तो नहीं होगी- जीतू पटवारी

भोपाल।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि इस समय देश में संविधान और आरक्षण बचाने का सवाल है। उन्होंने सवाल किया कि क्या हमारे देश में रशिया जैसा माहौल तो नहीं तैयार किया जा रहा..जहां विपक्षी नेताओं की हत्या तक कर दी जाती है।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि, इस समय देश में संविधान और आरक्षण बचाने का सवाल है। उन्होंने सवाल किया कि क्या हमारे देश में रशिया जैसा माहौल तो नहीं तैयार किया जा रहा.. जहां विपक्षी नेताओं की हत्या तक कर दी जाती है। उनके इस बयान पर पलटवार करते हुए बीजेपी ने कहा है कि विपक्ष के नेताओं की हत्या उन प्रदेशों में होती है जहां कांग्रेस या दूसरे गठबंधन की सरकार है, कांग्रेस को ऊलजलूल बात करने की आदत पड़ गई है।

भोपाल में मीडिया से बात करते हुए जीतू पटवारी ने कहा कि, कहीं हम चीन और रशिया जैसी स्थिति में तो नहीं पहुँच रहे। आरक्षण बचाने की, लोकतंत्र बचाने की, मीडिया की स्वतंत्रता बचाने की, मत के अधिकार को बचाने की ज़रूरत है। प्रधानमंत्री जी अपने भाषण में कुछ कहते हैं, उनके नेता कुछ कहते हैं। देश में इस साठ प्रतिशत चुनाव इस बात का है कि देश में संविधान बचेगा या नहीं। लोकतंत्र बचेगा या नहीं। चीन जैसा तो नहीं हो रहा कि एक ही पार्टी का शासन हो.. सरकारी मीडिया हो। रशिया जैसा तो नहीं हो रहा कि विपक्ष के नेताओं की हत्या होने लगी। इस तरफ तो देश नहीं जा रहा। देश के प्रधानमंत्री जो बोलते हैं वो देश की जनता और मीडिया भी महसूस रही है।

इसे लेकर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुरेंद्र शर्मा ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा है कि, जीतू पटवारी विपक्ष के नेताओं की हत्या पश्चिम बंगाल और केरल में होती हैं वहां किन दलों की और किस गठबंधन की सरकार हैं आप अच्छी तरह से जानते हैं। ऊल जलूल बकवास करना आपकी आदत बन चुकी है अच्छा होगा आप अपना इलाज़ किसी अच्छे मनोचिकित्सक से करवा लें।

जंगल की आग पर काबू पाने का रवैया निराशाजनक- सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी।

उत्तराखंड में जंगलों में लगी आग पर एक याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (15 मई) को सुनवाई की। इस दौरान शीर्ष अदालत ने केंद्र और राज्य सरकार को जमकर फटकार लगाई। कोर्ट ने उत्तराखंड सरकार पर कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि यह कहते हुए दुख हो रहा है कि जंगल की आग को नियंत्रित करने में राज्य का दृष्टिकोण 'असुविधाजनक' था।

उत्तराखंड के मुख्य सचिव को दिए निर्देश

न्यायमूर्ति बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने उत्तराखंड के मुख्य सचिव को 17 मई को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का निर्देश दिया है। पीठ में न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी और न्यायमूर्ति संदीप मेहता भी शामिल थे। उन्होंने कहा कि हालांकि, कई कार्य योजनाएं तैयार की जाती हैं, लेकिन उनके कार्यान्वयन के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाता है।' शीर्ष अदालत ने राज्य के वन विभाग में भारी रिक्तियों के मुद्दे को भी उठाया और कहा कि इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है।

चुनाव आयोग ने आंध्र प्रदेश के मुख्य सचिव और डीजीपी को किया तलब

नई दिल्ली, एजेंसी।

निर्वाचन आयोग ने आंध्र प्रदेश में चुनाव बाद हिंसा का संज्ञान लेते हुए घटनाओं को रोकने में प्रशासन की विफलता पर ''व्यक्तिगत रूप से स्पष्टीकरण देने'' के लिए राज्य के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को बृहस्पतिवार को तलब किया है। सूत्रों ने यह जानकारी दी है। आयोग ने राज्य सरकार को आदर्श आचार संहिता के अभी लागू होने की याद दिलाते हुए मुख्य सचिव और पुलिस प्रमुख से यह सुनिश्चित करने को कहा कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। अधिकारियों ने बताया कि आयोग ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि लोकतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है और लोकसभा चुनावों की घोषणा के बाद से मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार शांतिपूर्ण और हिंसा मुक्त चुनाव सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से चुनाव क्षेत्र की निगरानी कर रहे हैं। सूत्रों ने कहा कि, जब आंध्र प्रदेश के शीर्ष अधिकारी बृहस्पतिवार यहां चुनाव आयोग मुख्यालय में उपस्थित होंगे, तो उनसे चुनाव के बाद की हिंसा को रोकने में प्रशासन की विफलता के कारणों के बारे में ''व्यक्तिगत रूप से स्पष्टीकरण देने' के लिए कहा जाएगा। सूत्रों ने बताया कि, उनसे भविष्य में ऐसी किसी भी घटना से बचने के लिए उठाए जाने वाले एहतियाती कदमों के बारे में भी पूछा जाएगा। आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में मंगलवार को चुनाव बाद हिंसा की सूचना मिली, जहां सोमवार को लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ हुए थे। सत्तारूढ़ वाईएसआर कांग्रेस पार्टी और मुख्य विपक्षी तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के नेताओं ने घटनाओं के लिए एक-दूसरे पर आरोप लगाए हैं।

मोदी करते हैं मुस्लिम विरोधी राजनीति- असदुद्दीन ओवैसी

नई दिल्ली।

एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने भारतीय जनता पार्टी को वोट देने वालों को 'कटघरे' में खडा कर दिया है। साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर 'मुस्लिम विरोधी' राजनीति करने के आरोप लगाए हैं। हाल ही में पीएम मोदी ने कहा था कि वह हिंदू-मुस्लिम की राजनीति नहीं करते हैं। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अलावा कांग्रेस ने भी भाजपा पर निशाना साधा है।

हैदराबाद लोकसभा सीट से सांसद ओवैसी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मोदी ने अपने भाषण में मुसलमानों को घुसपैठिया और ज्यदा बच्चे वाला कहा था। अब वो कह रहे हैं कि वो मुसलमानों की बात नहीं कर रहे थे, उन्होंने कभी हिन्दू-मुस्लिम नहीं किया। उन्होंने सवाल किया, ये झूठी सफाई देने में इतना वक्त क्यों लग गया...?

उन्होंने आगे लिखा, मोदी का सियासी सफर सिर्फ और सिर्फ मुस्लिम विरोधी सियासत पर बना है। इस चुनाव में मोदी और भाजपा ने मुसलमानों के खिलाफ अनगिनत झूट और बेहिसाब नफरत फैलाई है। कटघरे में सिर्फ मोदी नहीं हैं, बल्कि हर वो वोटर है जिसने इन भाषणों के बावजूद भाजपा को वोट दिया।

कांग्रेस ने भी घेरा

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि, लोकसभा चुनाव के प्रचार अभियान के दौरान प्रधानमंत्री के पास हिंदू-मुस्लिम की राजनीति को छोड़कर कोई एजेंडा नहीं था। प्रधानमंत्री मोदी ने एक समाचार चैनल से बातचीत में कहा है, अगर मैं हिंदू-मुसलमान करूंगा तो मैं सार्वजनिक जीवन में रहने योग्य नहीं रहूंगा।

पड़ोसी मुल्कों से आने वाले 14 लोगों को मिलेगी सीएए के तहत नागरिकता

नई दिल्ली।

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के तहत 14 लोगों को नागरिकता मिली है। ये लोग पड़ोसी मुल्कों से धार्मिक आधार पर उत्पीड़न का शिकार होकर भारत आए थे। इस कानून के तहत नागरिकता पाने वाले ये पहले लोग हैं। होम मिनिस्ट्री ने बुधवार को इन्हें नागरिकता से संबंधित दस्तावेज सौंपे और उनके आवेदन को मंजूर कर लिया। इन लोगों को केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला ने नागरिकता संबंधी दस्तावेज सौंपे और बधाई दी। इसी साल 11 मार्च को नागरिकता संशोधन कानून लागू किया गया था। इस कानून के तहत आवेदन पर डिस्ट्रिक्ट लेवल कमेटी विचार करती है। इसके बाद राज्य स्तरीय सशक्त समूह के पास यह मामला जाता है।

उससे मंजूरी मिलने के बाद होम मिनिस्ट्री से इस पर फैसला होता है। बीते दो महीनों में होम मिनिस्ट्री के पास पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए लोगों के कई आवेदन आए हैं। इन लोगों में हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाई समुदाय के लोग शामिल हैं। ये लोग धार्मिक उत्पीड़न का शिकार होकर पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए हैं। ये सभी लोग 31 दिसंबर 2014 से पहले भारत आए थे। सीएए के अनुसार नागरिकता के लिए तय किया गया है कि 31 दिसंबर 2014 तक आए लोगों के आवेदन पर ही विचार किया जा सकता है।

इस कानून को 2019 में ही पारित कर दिया गया था, लेकिन इसके नियम नहीं तय हो पाए थे। इस कानून का तीखा विरोध हुआ था और फिर कोरोना काल के चलते भी यह अटका रहा। अंत में इस सके अधिसूचना जारी हो सकी थी। बता दें कि इस कानून के लागू होने के बाद भी बंगाल की सीएम ममता बनर्जी इसे चुनौती दे रही हैं। उनका कहना है कि यदि सीएए से भारतीय नागरिकों के अधिकारों पर किसी तरह का असर हुआ तो वह इसके खिलाफ खड़ी होंगी। इस कानून के अनुसार तीन पड़ोसी देशों से आने वाले हिंदू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और ईसाई समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता मिलेगी।

इसके तहत आने वाले लोगों को आवेदन करना होगा और उन्हें बताना होगा कि भारत की 8वीं अनुसूची में शामिल भाषाओं में से किसी एक में वे सहज हैं। यह आवेदन ऑनलाइन जमा किया जाता है। इसके साथ ही संबंधित देश के दस्तावेज भी दिखाने होंगे, जहां से पलायन करके आए हैं। खासतौर पर वहां की नागरिकता को साबित करने वाले दस्तावेज दिखाने होंगे। आवेदन मंजूर होने पर दूसरे देश की नागरिकता स्वतः समाप्त हो जाएगी और उन लोगों को भारत का नागरिक माना जाएगा।

जीतेगा तो मोदी, हारेगी तो अनिता नागरसिंह चौहान

भाजपा के अपनी जीत के दावे...?

अनिता हारी तो स्थिति हम तो डूबे सनम तुमको जी ले डूबे

माही की गूंज, झाबुआ।

2024 का लोकसभा चुनाव अपने शुरूआती दौर से ही नित नई कहानियां गढ़ता नजर आ रहा था। चुनाव प्रचार को लेकर काफी उठा पटक देखने को मिली। आरोप प्रत्यारोपों का दौर भी खूब चला। राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों ने खूब एक-दूसरे की बखिया उधेड़ी। आखिरकार 13 मई को चौथे चरण का मतदान संपन्न हुआ और राजनीतिक उठा-पटक शांत हुई। 13 मई को 2024 लोकसभा चुनावों को लेकर मतदाताओं में काफी उत्साह देखा गया। जमकर मतदान भी हुआ, लेकिन बावजूद इसके 2019 के मुकाबले यह मतदान थोड़ा कम ही रहा। मतदान प्रतिशत के आंकड़ों ने राजनीतिक दलों को असमंजस की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। मतदाता खामौश है, तो इस बात का अंदाजा लगाना भी मुश्किल हो रहा है कि, कौन किस स्थिति में है।

बहरहाल लोकसभा चुनावा 2024 में रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट कड़े मुकाबले में देखी जा रही है। यहां भाजपा-कांग्रेस में सीधे तौर पर कड़ी टक्कर देखी जा रही है। इस संसदीय सीट से भाजपा ने नए चेहरे को मौका दिया है तो कांग्रेस ने फिर एक बार कांतिलाल को रण में उतारा है। भूरिया को लगभग 4 दशकों से अधिक का राजनीतिक अनुभव है और यह उनकी परम्परागत सीट रही है।

रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट भाजपा की अगर बात की जाए तो यहां अभी तक सिर्फ एक बार ही भाजपा सफल होती नजर आई है। इसके अलावा पहली बार जब भाजपा ने इस सीट पर कब्जा किया था उसके महज कुछ महीनों में ही यह सीट सांसद दिलीपसिंह भूरिया के देहांत के बाद खाली हो गई थी और कांतिलाल भूरिया ने फिर से इसे अपने कब्जे में ले लिया था। सांसद गुमानसिंह डामोर का ही एक मात्र कार्यकाल रहा जिसे भाजपा ने पूर्ण किया। हालांकि सांसद गुमानसिंह की कोई खास उपब्धियां इस समय में नहीं रही और अफसरी मिजाज के कारण उनकी शिकायतें भाजपा केंद्रीय संगठन तक पहुंची। परिणाम यह रहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव में गुमानसिंह का टिकट भाजपा केंद्रीय संगठन ने काट दिया और उनकी जगह आलीराजपुर की अनिता नागरसिंह चौहान को नए चेहरे के रूप में मैदान में उतार दिया।

बात अगर भाजपा प्रत्याशी अनिता नागरसिंह चौहान की करें तो उनका अपना राजनीतिक अनुभव बहुत कम है। वे आलीराजपुर जिला पंचायत अध्यक्ष जरूर रही है, लेकिन उनकी राजनीति सिर्फ आलीराजपुर विधानसभा के आसपास ही दिखाई पड़ती है। रतलाम-झाबुआ लोकसभा क्षेत्र के लिए उनका चेहरा बिल्कुल ही नया है। हालांकि अनिता के पति नागरसिंह चौहान तीन बार के आलीराजपुर विधायक है और वर्तमान प्रदेश सरकार में वे वनमंत्री के पद पर है। इसके अलावा इस संसदीय क्षेत्र में वे सिर्फ मोदी फैक्टर की वहज से ही है और इस चुनाव में संसदीय क्षेत्र के तीन प्रदेश मंत्री के भरोसे वे अपनी नैया पार लगाने में जुटी थी। इस संसदीय सीट पर उनका अपना कोई वर्चस्व नहीं है।

इस लोकसभा चुनाव में आए मतदान प्रतिशत को हर कोई अपने पक्ष में बता रहा है। भाजपा का भी अपनी ही जीत दावा है। मगर यह कहां तक सफल होगा यह अभी भी समय के गर्त में है। 4 जून को आने वाले परिणाम इसे साफ करेंगे। अगर अनिता नागरसिंह चौहान इस संसदीय सीट से जीत भी जाती है तो यह जीत उनकी नहीं बल्कि मोदी फैक्टर की मानी जाएगी और अगर वे इस लोकसभा चुनावों में हार का सामना करती है तो यह उनकी अपनी हार मानी जाएगी। ऐसे कई कारण है जो यह बताते है कि, भाजपा इस रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर हारेगी तो क्यों हारेगी और जीतेगी तो क्यों जीतेगी।

इन सब बातों पर कई तरह की टिप्पणियां और विशलेषण हो चुके है, लेकिन वास्तव में यह किसी को नही पता कि आखिर परिणाम क्या होंगे। इस लोकसभा के चुनाव प्रचार ने जिस तरह की स्थितियां बना दी है वह शायद अनिता नागरसिंह चौहान के पक्ष में नहीं है। कांग्रेस, कांतिलाल भूरिया और उनके बेटे डॉ. विक्रांत भूरिया ने लगातार उन पर निजी हमले किए है। जिस तरह के आरोप कांतिलाल भूरिया और उनके डॉक्टर बेटे ने अनिता और नागरसिंह चौहान के परिवार पर लगाए है वे काफी गंभीर और संगीन नजर आते है। सोशल मीडिया पर वायरल नागरसिंह चौहान की एक 25 सेकंड की वीडियो जिसमें वे अपने कई बार जेल जाने का जिक्र कर रहे है और उनके पिता जी को 20 साल की सजा का जिक्र कर रहे है। कहीं न कहीं इन आरोपों का नुकसान अनिता नागरसिंह चौहान को उठाना पड़ सकता है। हो सकता है कि, इन आरोपों से इस संसदीय सीट पर मतदान पर भी असर पड़ा हो। बताने वाले तो यह भी बताते है कि, जिस तरह के आरोप नागरसिंह चौहान व उनके परिवार पर लगे है, उससे शहरी क्षेत्र का मतदाता प्रभावित हुआ है। मतलब इस संसदीय सीट के शहरी क्षेत्रों में इन आरोपों की वजह से अनिता नागरसिंह चौहान को नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसका यह भी मतलब निकाला जा सकता है कि, शहरी क्षेत्रों में भाजपा का वोट कटकर कांतिलाल भूरिया के खाते में जा सकता है।

हालांकि राजनितिक पंडितों की टिप्पणी यह कहती है और भाजपा का भी यही मानना है कि, रतलाम शहर व रतलाम ग्रामीण में हुई बंपर वोटिंग भाजपा के पक्ष की हो सकती है और यही कारण है जो भाजपा को इस संसदीय सीट पर विजयीश्री दिलवा दे। क्योंकि 2019 के लोकसभा चुनावों में भी भाजपा को यहीं से बढ़त मिली थी। चूंकि इस बार का मतदान प्रतिशत रतलाम क्षेत्र में लगभग 2019 जैसा ही दिखाई पड़ रहा है। जो भी हो लेकिन प्रत्याशियों के भाग्य का पिटारा अभी बंद है। 4 जून को जब यह पिटारा खुलेगा तो हो सकता है चौकाने वाले परिणाम सामने आए।

अगर अनिता नागरसिंह चौहान इस संसदीय सीट से हारती है, तो भाजपा प्रदेश संगठन में कई तरह की उठा -पटक देखने को मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मोटा भाई ने मंत्रियों पर तलवार लटका रखी है। अगर अनिता नागरसिंह चौहान हारती है तो स्थिति हम तो डूबे सनम तुमको भी ले डूबे वाली संभवतः देखने को मिल सकती है। अगर ऐसा होता है तो इस संसदीय सीट के तीन प्रदेश मंत्रियों मे से किस पर गाज गिरेगी यह कोई नहीं जानता। हो सकता है नागरसिंह चौहान या निर्मला भूरिया को इस लटकी तलवार का सामना करना पड़े। जिस तरह की चेतावनी अमित शाह की ओर से मिली है वह मंत्री पद गवाने और घर बैठ जाने की है।

पांच दिवसीय शिविर का हुआ शुभारंभ

माही की गूंज , पेटलावद।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पेटलावद के आतिथ्य में धर्मदास गण परिषद व अखिल भारतीय धर्मदास युवा संगठन के संयोजन में राष्ट्रीय स्तर का बच्चों एक पांच दिवसीय आवासीय शिविर का पेटलावद में 14 मई को शुभारंभ हुआ। जिसमें देश भर के 440 से अधिक व स्थानीय 19 बच्चों सहित 459 बच्चे इस शिविर में भाग ले रहे हैं। शिविर में प्रतिदिन प्रात 4:50 बजे से गतिविधियां शुरू होती है जो रात्रि 8:30 बजे तक विभिन्न धार्मिक आयोजनों व क्लासों के साथ संपन्न होती है ।सर्वप्रथम प्रातः राईसी प्रतिक्रमण उसके बाद प्रार्थना एवं योग की क्लास लगती है एवं प्रथम और द्वितीय सत्र होता है। शिविर में शामिल बच्चो के लिए नवकारसी ,जलपान एवं दिन में भोजन का भी आयोजन किया जाता है। जिसमें संत भगवतं संस्कारों का पाठ पढ़ाते हैं। जिसके बाद प्रतियोगिता होती है एवं बच्चों को पुरस्कार भी दिए जाते। शाम को भौजन के बाद देवसी प्रतिक्रमण चौवीसी व ज्ञान चर्चा होती है। दिनभर बच्चे व्यस्त रहकर धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेकर अपना आध्यात्मिक विकास कर रहे हैं। शुभारंभ के अवसर पर धर्मदास गण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनीत बागरेचा धर्मदास युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज जैन श्रीसंघ पेटलावद के अध्यक्ष अनोखी लाल मेहता नवयुवक मंडल के अध्यक्ष चेतन कटकानी महिला मंडल अध्यक्ष आजाद भंडारी बहू मंडल अध्यक्ष अनिता भंडारी बालिका मंडल अध्यक्ष सखी झाड़मता अणु मित्र मंडल अध्यक्ष सिद्धू चणोदिया सहित कई समितियां के सदस्य व श्रावक श्राविका उपस्थित थे। बच्चों में अपार उत्साह को देखकर सभी गदगद है।

करंट लगने से मवेशी की हो रही मौत की अनदेखी करना कहीं महंगा न पड़ जाए

माही की गूंज, खवासा।

हर जीव में अपनी जान होती है और जिस तरह से इंसान को जीने का अधिकार है, उसी तरह किसी भी जीव को अपने जीने का अधिकार है। लेकिन कहने को तो कई जीव प्रेमी जानवरों के प्रति अपनी संवेदनाएं दिखाते हैं पर कई बार देखा जाता है कि, मवेशियों की बेमौत करंट लगने से हो जाती है। लेकिन मवेशी की मौत होने के बाद भी जवाबदार अधिकारी, स्थानीय निकाय व वे जीव प्रेमी जो जीवों के प्रति अपनी संवेदनाएं दिखाते हैं, सभी करंट लगने से होने वाले मवेशियों की मौत को अनदेखा कर दिया जाता है।

माही की गूंज ने पिछले अंकों में भामल में करंट लगने से हुई मवेशी की मौत का समाचार भी प्रकाशित किया था। इसी कड़ी में खवासा की गोपाल कॉलोनी में एक ट्रांसफार्मर लगा है, जिसमें अर्थिंग व सपोर्ट तार लगा है। लगे उक्त ट्रांसफार्मर के स्थान पर गोपाल कॉलोनी से जाने वाला पानी भी कच्ची नाली के रूप में बहाव होकर पानी रिसते हुए जाता है।

उक्त ट्रांसफार्मर के अर्थिंग तार से करीब एक माह पूर्व ही एक गाय की मौत करंट लगने से हो गई थी। जवाबदारों की अनदेखी फिर भी ऐसी की ऐसी ही रही और बुधवार को एक और बेजुबान जानवर जिसे हम गौ-माता कहते हैं एक गाय की मौत उसी ट्रांसफार्मर में लगे अर्थिंग तार से करंट लगने से मौत हो गई।

लगता है जवाबदारों की यह अनदेखी किसी मवेशी की मौत के बाद नहीं बल्कि किसी इंसान की मौत होने के बाद निंद्रा से जाग अपनी सजगता का परिचय देंगे। यानी की जवाबदार द्वारा यह इंतजार किया जा रहा है कि, उक्त ट्रांसफार्मर से अर्थिंग तार में निकलने वाला करंट से किसी इंसान की मौत हो उसके बाद ट्रांसफार्मर में सुधार कर अर्थिंग में जाने वाले करंट को बंद किया जाएगा।

आरूष अग्रवाल 10 वीं में 97 प्रतिशत के साथ जिले में प्रथम

माही की गूंज ,पेटलावद।

नगर के होनहार छात्र आरूष अग्रवाल ने 10 वीं सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में पूरे जिले में प्रथम आ कर पेटलावद का नाम रोशन किया। आरूष ने 97 प्रतिशत अंक प्राप्त कर झाबुआ जिले ही नहीं वरन आसपास के चार जिलों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।आरूष ने सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करते हुए सभी विषयों में 90 से अधिक अंक प्राप्त किये है। जिसमें सामाजिक विज्ञान में 99 अंक तो विज्ञान और गणित में 98-98 अंक प्राप्त किये है। आरूष की इस सफलता पर माता पिता,गुरूजनों और परिवारजनों सहित इष्टमित्रों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है। आरूष के दादा वीरेंद्र मोहन अग्रवाल,दादी शोभादेवी अग्रवाल, पापा सचिन अग्रवाल,मम्मी समता अग्रवाल,भाई आराध्य अग्रवाल और अंकल अर्पित अग्रवाल व राहुल अग्रवाल ने उनको मिठाई खिलाकर सफलता की बधाई दी।

आरूष ने सेंट मेरी कान्वेट स्कूल में पढाई कर रहे है। चर्चा में आरूष ने बताया की वह आगे चल कर देश की सेवा करना चाहते है। और विज्ञान के क्षेत्र में कुछ करने की तमन्ना है।

सफाई की व्यवस्था चरमरा गई

माही की गूंज थांदला।

हमेशा स्वच्छता को प्राथमिकता देने वाली थांदला नगर परिषद को15 ही वार्ड की सड़क पर फैली गंदगी मुंह चिढ़ाती हुई दिख रही हैं। वार्डों में कचरे का ढेर लगा हुआ है। जिससे मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। साथ ही गंभीर बीमारियों के फैलने की आशंका बनी हुई है। गंदगी एवं कचरे के ढ़ेर स्वच्छता अधिकारी की लापरवाही दर्शाता है । नगर पालिका द्वारा नगर की सफाई व्यवस्था पर सालाना लाखों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, लेकिन इसके बाद भी नगर के वार्डों में सफाई की व्यवस्था चरमरा गई है। नगर परिषद के स्वच्छता अधिकारी द्वारा इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं करने से चारों ओर गंदगी का आलम है। कचरा नहीं निकालने से मोहल्ले में खुलकर सांस लेना भी दुभर हो गया है।

नगर परिषद में नागरिकों की कोई समस्या सुननें वाला नहीं। नगर परिषद के पदाधिकारी व पार्षद नगर के बाहर जहां कोई बस्ती नहीं है वहां नये रोड का निर्माण कार्य करवाकर अपना हिस्सा लेकर जेब भर रहे हैं और उनकी इस करतुत का खामियाजा कर्मचारियों को भुगतान पड़ेगा। क्योंकि जांच होने पर कर्मचारियों पर गाज गिरेगी। नेताओं और कर्मचारियों की खींचतान में आम नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

श्रीमद् भागवत कथा के छटवे दिन श्रीकृष्ण रुक्मणी विवाह का हुआ आयोजन

माही की गूंज, बरवेट।

निश्छल मन से किए गए कार्य में विजय प्राप्त होती है। यह बात पाटीदार समाज की धर्मशाला में चल रही भागवत कथा के छटवे दिन पंडित केशव चतुर्वेदी ने कही।

उन्होंने कहा कि जोभी काम सच्चे मन से करोगे उसमे अवश्य विजय प्राप्त होगी। रूखमणी ने श्रीकृष्ण से सच्चे मन और निश्चल ह्रदय से प्रेम किया था तो उनको भगवान श्रीकृष्ण खुद वरने आए थे।

श्रीमद भागवत कथा के छटवे दिन श्रीकृष्ण रुक्मणी विवाह का आयोजन हुआ। जिसे बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। श्रीमद भागवत कथा के छठे दिन भागवत महारास के पंच अध्याय का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि महारास में पांच अध्याय है। उनमें गाए जाने वाले पंच गीत भागवत के पंच प्राण है। जो भी ठाकुरजी के इन पांच गीतों को भाव से गाता है वह भव पार हो जाता है। उन्हें वृंदावन की भक्ति सहज प्राप्त हो जाती है। कथा में भगवान का मथुरा प्रस्थान, कंस का वध, महर्षि संदीपनी के आश्रम में विद्या ग्रहण करना, कालयवन का वध, उधव गोपी संवाद, ऊधव द्वारा गोपियों को अपना गुरु बनाना, द्वारका की स्थापना एवं रुकमणी विवाह के प्रसंग का संगीतमय भावपूर्ण पाठ किया गया। भारी संख्या में भक्तगण दर्शन हेतु शामिल हुए।

रूखमणी श्रीकृष्ण का प्रेम प्रसंग

कथा के दौरान महाराज आचार्य केशव चतुर्वेदी ने कहा कि महारास में भगवान श्रीकृष्ण ने बांसुरी बजाकर गोपियों का आह्वान किया और महारास लीला द्वारा ही जीवात्मा परमात्मा का ही मिलन हुआ। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने 16 हजार कन्याओं से विवाह कर उनके साथ सुखमय जीवन बिताया। भगवान श्रीकृष्ण रुखमणी के विवाह की झांकी ने सभी को खूब आनंदित किया। भागवत कथा के छठे दिन कथा स्थल पर रूखमणी विवाह के आयोजन ने श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। श्रीकृष्ण रुखमणी की वरमाला पर जमकर फूलों की बरसात हुई। उन्होंने भागवत कथा के महत्व को बताते हुए कहा कि जो भक्त प्रेमी कृष्ण रुखमणी के विवाह उत्सव में शामिल होते हैं उनकी वैवाहिक समस्या हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

संकल्प सत्य है तो भगवान भी साथ देते है

उन्होंने कहा कि जीव परमात्मा का अंश है इसलिए जीव के अंदर अपारशक्ति रहती है यदि कोई कमी रहती है वह मात्र संकल्प की होती है। संकल्प एवं कपट रहित होने से प्रभु उसे निश्चित रूप से पूरा करेंगे उन्होंने महारास लीला श्री उद्धव चरित्र श्री कृष्ण मथुरा गमन और श्री रुक्मणी विवाह महोत्सव प्रसंग पर विस्तृत विवरण दिया श्री रुखमणी विवाह महोत्सव प्रसंग पर व्याख्यान करते हुए उन्होंने कहा कि रुकमणी के भाई रुकमि ने उनका विवाह शिशुपाल के साथ सुनिश्चित किया था लेकिन रुखमणी ने संकल्प लिया था कि वह शिशुपाल को नहीं केवल गोपाल को पति के रूप में वरण करेंगे। उन्होंने कहा शिशुपाल असत्य मार्गी है और द्वारिकाधीश भगवान श्री कृष्ण सत्य मार्गी है। रुखमणी विवाह प्रसंग पर आगे कथा वक्ता ने कहा कि इस प्रसंग को श्रद्धा के साथ श्रवण करने से कन्याओं को अच्छे घर और वर की प्राप्ति होती है और दांपत्य जीवन सुखद रहता है। इस मौके पर कथा आयोजक पूनमचंद पाटीदार परिवार ने आरती का लाभ लिया। इस अवसर पर रतलाम से नरेश पाटीदार, हरीश पाटीदार, मुकेश पाटीदार , गौवर्धनलाल पाटीदार, गोविंदलाल पाटीदार, राजेश पाटीदार, राजेन्द्र प्रसाद त्रिवेदी सहित आसपास दर्जनों गाव से कथा श्रवण करने के लिए बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद थे।

महज छः महीनें में वोटिंग प्रतिशत में आई 5 प्रतिशत की गिरावट

स्वीप कार्यक्रमों की हकीकत आई सामने, 2019 से लगभग 2 प्रतिशत कम रहा मतदान

माही की गूंज, झाबुआ।

लोकसभा चुनावों को लेकर चल रही उठा पटक 13 मई गुजरने के साथ ही शांत हो गई है। अब प्रत्याशियों का भविष्य ईवीएम में कैद हो चुका है। 4 जून को ईवीएम का यह पिटारा खुलेगा तब तय होगा कि, इस लोकसभा चुनाव का सिरमोर कौन है। हालांकि इस बार मतदान का प्रतिशत 2019 के लोकसभा चुनावों के मुकाबले लगभग 2 प्रतिशत कम रहा है, लेकिन 2023 में हुए विधानसभा चुनावों के मतदान प्रतिशत से देखा जाए तो यहां लगभग महज छः महीने में ही 5 प्रतिशत के आसपास की गिरावट दिखाई दी है।

वैसे तो प्रशासन जिस तरह से स्वीप कार्यक्रमों का आयोजन कर ऐसा ढकोसला कर रहा था कि, अबकि बार मतदान का आंकड़ा 80 प्रतिशत के आसपास पहुंच जाएगा। लेकिन 13 मई को हुए इस मतदान ने प्रशासन के स्वीप कार्यक्रमों की पोल खोलकर रख दी। स्थिति यह हो गई कि 2019 के लोकसभा चुनावों के मतदान प्रतिशत से भी लगभग 2 प्रतिशत मतदान कम हुआ और 2023 के पिछले विधानसभा के मतदान प्रतिशत से मिलान किया जाए तो यहां तो मतदान प्रतिशत में लगभग 5 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। अब इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि, प्रशासनिक अमले के स्वीप कार्यक्रम कहां तक सफल हुए है। हालांकि स्वीप कार्यक्रम के जरिए मतदान बढ़ाने का जिस तरह से प्रशासन दावा कर रहा था वह शायद उसमें सफल होता दिखाई नहीं दिया है। बावजूद इसके रतलाम-झाबुआ लोकसभा सीट पर 72 प्रतिशत से अधिक मतदान रहा है। 2024 के इस लोकसभा चुनावों में 72 प्रतिशत से अधिक मतदान होना कोई बुरा तो नहीं है, लेकिन यह प्रशासनिक कार्यप्रणाली को समझने के लिए काफी है कि, प्रशासन द्वारा मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के लिए चलाए गए सारे स्वीप कार्यक्रम सिर्फ कागजी घोड़े ही नजर आए है।

माही की गूंज इस बात को लेकर अपने पिछले अंकों में इस बात का जिक्र कर चुका है कि, प्रशासन के स्वीप कार्यक्रम निम्न स्तर के होकर कहीं ढकोसला ना साबित हो जाए। गूंज की इस बात की पुष्टि 13 मई को आए मतदान प्रतिशत के आंकड़ों ने बखूबी कर दी है। यहां एक बात और समझने वाली है कि, जिस तरह से मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के लिए राजनीतिक पार्टियों ने जोर लगाया है, अगर उसको हटा दिया जाए तो मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर प्रशासन द्वारा की जा रही उठा-पटक निरर्थक ही नजर आएगी। क्योंकि यह तय है कि राजनीतिक पार्टियां अगर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए कोशिशें नहीं करती तो जिस आंकड़े पर प्रशासन अब इतरा रहा है वह औंधे मुंह गिरा पड़ा मिलता। हालांकि 72 प्रतिशत मतदान होना कोई अचंभे वाली बात नहीं है, क्योंकि इसके पहले भी यहां इससे अधिक मतदान प्रतिशत देखा जा चुका है। पिछले विधानसभा चुनावों के प्रतिशत को ही देखें तो 2024 के इस लोकसभा चुनावों का मतदान प्रतिशत कम ही नजर आएगा। महज कुछ महीनों में 5 प्रतिशत मतदान गिरना थोड़ी अचंभे वाली बात है। हालांकि यहां कुछ लोग मतदान प्रतिशत की गिरावट को मौसम के परिवर्तन से भी जोड़कर देख रहे है, लेकिन मतदान प्रतिशत की दिनभर की रफ्तार यह बताती है कि, मौसम परिवर्तन का इस पर किसी प्रकार का कोई असर नहीं पड़ा है।

यहां अगर मतदान प्रतिशत की बढ़ोतरी की बात की जाए तो पूरे रतलाम-झाबुआ संसदीय क्षेत्र में सिर्फ जोबट और झाबुआ में ही बढ़ा है। वह भी पिछले विधानसभा के मतदान प्रतिशत के हिसाब से वरना लोकसभा 2019 के मुकाबले तो सभी दूर मतदान प्रतिशत में गिरावट देखी गई है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि, प्रशासन मतदान प्रतिशत बढ़ाने के इस खेल में फेल होता ही नजर आया है।

इधर राजनीतिक पार्टियों की अगर बात करें तो मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए सत्ताधारी दल की भाजपा ने अच्छा-खासा जोर लगाया। हालांकि यह माहौल लोकसभा चुनाव के शुरूआती दौर में नहीं दिखाई दिया। मगर मोटा भाई की धमकी मिलने के बाद जब मंत्रियों पर तलवार लटकी तो स्थानीय संगठन हरकत में और मतदान प्रतिशत को बढ़ाने की कवायदें शुरू हुई। हालांकि मोटा भाई की मंशा के अनुरूप तो अब भी मतदान प्रतिशत सामने नहीं आया है। अब देखने वाली बात यह होगी कि इस लोकसभा चुनाव में सामने आए मतदान प्रतिशत से मोटा भाई कितने संतुष्ट होंगे और अगर संतुष्ट नहीं हुए तो लोकसभा क्षेत्र के तीन मंत्रियों पर किस तरह की गाज गिरने वाली है...?

कांग्रेस भी मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर खासी चिंता में दिखाई दी। मगर यहां किसी दबाव वाली स्थिति को नहीं देखा गया। मनमर्जी के राजा बन कार्यकर्ता अपने हिसाब से काम करते दिखाई दिए। हालांकि कांग्रेस खेमे से मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए लगाया गया जोर कुछ खास नहीं था। मगर जमीनी स्तर पर कार्यकर्ता आम नागरिक की तरह मतदान करने की गुहार आम मतदाताओं से करते दिखाई दिए।

पलायन से लौटे मजदुर 20 प्रतिशत तक बढ़ा मतदान

रतलाम शहरी क्षेत्र को छोड़कर, रतलाम संसदीय सीट की बाकी सभी विधानसभा क्षेत्र से पलायन पर गये मजदुर उम्मीद से अधिक गुजरात और राजस्थान के साथ अन्य राज्य में मजदुरी करने गये मजदुर मतदान के 3-4 दिन पुर्व से आना शुरू हो गए। कई मजदुरो से जब हमारी चर्चा हुई तो ये ही बताया की अन्य राज्य के ठेकेदार जिनके पास मजदुरी करने गए थे उन्होने मतदान करने हैतु हमें भेजा है। कई ठेकेदार ने तो मजदुरो को यहा तक कह कर भेजा की मतदान करने का उगंली पर निशान होने पर वापसी काम पर रखा जाएगा। एसे में अधिकांश मजदुर मतदान दिनांक तक घर वापसी हुई और सभी मजदुरी से आए मतदाताओं ने मतदान भी किया। वापसी लोटे मजदुरो एवं हुए मतदान के संबंध में ये ही एक आकड़ा लगाया जा रहा है कि, अन्य राज्य से वापसी भेजे इन मतदाताओं का मतदान 15 से 20 प्रतिशत तक रहा है। यानी की पलायन पर गए इन मजदुरो को मतदान हैतु यहा नही भेजा जाता तो तय है इस बार लोकसभा चुनाव का मतदान प्रतिशत 50 से 55 प्रतिशत तक ही सिमट कर रह जाता। जबकी सिर्फ मतदान हेतु पलायन से लोटे मजदुरो ने ऐन-केन प्रशासन की छवी को धुमील होने से भी बचा लिया।

अधिकारी चुनाव में व्यस्त, भ्रष्टाचारियों ने चला दी मजदूरों के हक पर जेसीबी

ग्रामीणों ने दर्ज करवाई शिकायत, पहले भी आ चुके कई मामले पर कोई सुनवाई नही

माही की गूंज, पेटलावद।

जिले में मनरेगा योजना का मखोल उड़ाना लगातार जारी है और पेटलावद विकास खण्ड भ्रष्टाचारियों के लिये दूध देती गाय बना हुआ है। जहां पहले भी कई मामले सामने आ चुके हैं जिसमे मजदूरों के हक पर डाका मारते हुए न केवल जेसीबी मशीनों से तालाब, सुदुर सड़क, चैक डेम बना लिए जिनकी शिकायत बकायदा वीडियो के साथ की गई। ये ही नही भारी मशीनों से हुए काम की राशि निकालने के लिए एजेंसी द्वारा मजदूरी के नाम फर्जी मजदूरों जिसमे जवाबदारो के रिश्तेदार ओर करीबियों के जाबकार्ड लगा कर राशि का आहरण कर लिया जाता है।

एक बार विकास खण्ड में ऐसा मामला सामने आया है। जहा अधिकारी चुनाव व्यवस्था में व्यस्त थे और भ्रष्ट अपना काम करने मे व्यस्त थे। हर बार की तरह इस बार भी जागरूक ग्रामीणों ने इसकी लिखित शिकायत दर्ज करवाते हुए मनरेगा के कार्य मे चलती जेसीबी के फोटो व वीडियो तक पेश किए हैं। शिकायतकर्ता मोहन पिता मलजी खड़िया, नेरुलाल पिता हेमराज मेडा निवासी बेकल्दा ने ग्राम पंचायत बेकल्दा के सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक पर मनरेगा के कार्यो में भारी भ्रष्टाचार करने का आरोप लगा कर जिला पंचायत सीओ को शिकायत दर्ज करवाई है। शिकायतकर्ताओं के अनुसार ग्राम पंचायत बेकल्दा सरपंच, सचिव और रोजगार सहायक

के द्वारा आचार संहिता में शासकीय योजना के तालाब बावलिया वाला तालाब, पिलीवाला तालाब, रतनजोध वाला तालाब, नेगडउ वाला तालाब से लाखो की लागत से निर्माण किया जा रहा है। उक्त निर्माण शासकीय मापदंडों के विपरीत किया जाकर भारी भ्रष्टाचार किया जा रहा है। तालाब निर्माण में काली मिट्टी का उपयोग नहीं किया जा रहा है न ही पानी का उपयोग किया जा रहा है। केवल मोरम डालकर ही तालाब निर्माण किया जा रहा है। साथ ही उक्त तालाब निर्माण के कार्यो में जेसीबी मशीन से कार्य किया जा रहा है और मजदूर नहीं लगाए जा रहे है। फर्जी मजदूरो के नाम भरकर हाजरी लगाकर मस्टर भरा जा रहा है। जबकि कार्य स्थल पर एक भी मजदूर नहीं है। दिन-रात जेसीबी से कार्य करवा रहे है।

शिकायतकर्ता द्वारा बताया जा रहा है कि, ग्रामीणों ने पटवारी से लेकर अधिकारीयो तक इसकी मौखिक गुहार लगाई लेकिन सुनवाई नही हुई और कार्य बेरोकटोक जारी रखा गया। विकास खण्ड में लगातार ऐसे मामले सामने आए हैं लेकिन शिकायत के बाद जांच में मामलों को रफा-दफा कर दिया जाता है। जिससे साफ है कि, न केवल स्थानीय एजेंसी बल्कि विकास खण्ड ओर जिले के जिम्मेदार अधिकारी भी इस भ्रष्टाचार के खेल में शामिल हैं। मोहन ओर नेरुलाल ने बताया कि, जिस तरह से पंचायत दादागिरी ओर शिकायत के बाद भी बेखोफ भ्रष्टचार कर रहे है जिससे साफ है कि कमीशन के खेल में मिलीभगत सब की है।

प्रथम अध्यक्ष कु. उत्तरा उपाध्याय बनी

माही की गूंज, पेटलावद।

तहसील के ब्राह्मण समाज में कन्या मंडल की सक्रियता को देखते हुए समाज के अध्यक्ष मनोज जानी की सहमति से महिला मंडल की अध्यक्ष संगीता त्रिवेदी ने श्री परशुराम कन्या मंडल का गठन समाज की बालिकाओं की बैठक कर सर्व सहमति से करवाया। बैठक मे श्री परशुराम कन्या मंडल की प्रथम अध्यक्ष के रूप में सबसे सक्रिय कन्या कार्यकर्ता उत्तरा कमलेश उपाध्याय की नियुक्ति की गई। इस नियुक्ति पर समाज के सभी पदाधिकारियों और समाजजनों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उत्तरा उपाध्याय को बधाई दी।

तीन नए कानून के लिए अधिवक्ताओं की कार्यशाला सम्पन्न

माही की गूंज,झाबुआ।

अधिवक्ता परिषद मालवा प्रांत जिला इकाई द्वारा बाड़कुआं स्थित निजी गार्डन में स्टडी सर्किल भारत में तीनों नए कानून के मार्गदर्शन के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश द्वय जी.डी. सक्सेना एवं न्यायाधीश आई.एस.श्रीवास्तव व अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के केंद्रीय संगठन मंत्री श्रीहरि ने तीनों कानूनों पर विस्तृत प्रकाश डाला। संगठन के पदाधिकारियों ने अतिथियों का पुष्पमालाओं से स्वागत करते हुए अंचल के प्रतीक तीर-कमान, गोफन व झुरडी भेंट की। कार्यशाला में लगभग 16 जिलों के 400 से अधिक अधिवक्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन अधिवक्ता परिषद झाबुआ इकाई के जिला अध्यक्ष दिनेश सक्सेना, जिला महामंत्री सौरभ सोनी, प्रांत मंत्री मुकुल सक्सेना, उमंग सक्सेना, स्वप्निल सक्सेना, सौरभ सक्सेना, लोकेंद्र बिलवाल, बीएल सोनी, उत्तम जैन, कृष्ण लाल शाह द्वारा किया गया। इस अवसर पर अधिवक्ता परिषद मालवा प्रांत मध्यप्रदेश प्रदेश संगठन जिला झाबुआ संगठन की अनुशंसा पर थांदला इकाई के अध्यक्ष पद के लिए नीलेश जैन, उपाध्यक्ष संजय सिंह पंजल, महामंत्री सुरेश बैरागी एवं महिला इकाई अध्यक्ष के लिए एडवोकेट कुमारी मयूरी धानक को मनोनीत किया गया। जिसपर उपस्थित परिषद ने प्रसन्नता व्यक्त कर उनका भी सम्मान किया।

मौसम ने बदली करवट, किसान सकते में, हो सकता है भारी नुकसान

माही की गूंज, बरवेट।
जगदीश प्रजापति

किसानों के लिए खेती करना किसी सट्टे से कम नही है। क्योंकि, मौसम अच्छा रहा तो फसल भी अच्छी रहती है ओर मौसम खराब रहा तो मुह में आया हुआ निवाला भी छीन सकता है। अधिक वर्षा हो जाती है तो फसल खराब हो जाती है और यदि वर्षा नहीं हुई, तब फसल पानी के कमी के कारण सुख जाती है। मानसून हवा से भी फसल खराब होती है। जिससे किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। मौसम बदलने से लोगों के जीवन में सीधा असर पड़ता है, लोगों को शारीरिक परेशानी का भी सामना करना पड़ता है। इसलिए लोग मौसम बदलने के कारण, मौसम से बचने के लिए हर मौसम में अपना पहनावा बदलते रहते हैं।

वर्तमान में जिस हिसाब से मौसम बदल रहा है। उससे प्याज सहित टमाटर, बेलवाली सब्जी जैसे भिंडी, गिलकी, तरोई, बैंगन, धनिया, मिर्ची की फसले खराब होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। वर्तमान में प्याज उत्पादक किसान को सबसे ज्यादा चिंता सता रही है। इस समय हुई बारिश से प्याज उत्पादक किसान को अपनी प्याज खराब होने की चिंता सता रही है। क्योकि किसानों के पास प्याज भंडारण की कोई सुविधा नही है। वही कई किसानों के प्याज

अभी भी खलिहानों में पड़े है। जिनकी सफाई कर बोरिया भरने का कार्य चल रहा है। ऐसे में बारिश होने से प्याज की क्वालिटी खराब हो सकती है।

महंगे होते खाद, बीज और दवाई के कारण पहले ही किसानों की कमर तोड़ दी है। उस पर जब प्रकृति की मार किसानों पर पड़ती है तो फिर वह आर्थिक बोझ से नीचे दबते चले जाता हैं और खेती से मुनाफा तो ठीक लागत लगाना भी मुश्किल हो जाता है। इस पूरे साल मौसम की बेवफाई का दंश किसानों को झेलना पड़ रहा है।

प्याज की क्वालिटी खराब हो सकती है

बरवेट के वरिष्ठ किसान रतनलाल पाटीदार ने बताया कि, सोमवार को बेमौसम बारिश और आंधी के कारण खलिहानों में रखा प्याज खराब हो सकता है, इसे देखकर किसान चिंतित हैं। सोमवार को गरज के साथ हुई तेज बारिश ने अंचल को तरबतर कर दिया। जोरदार गड़गड़ाहट के साथ बादल जमकर बरसे। मौसम की बेरूखी ने किसानों की रही-सही कमर भी तोड़ दी है। एकाएक हवा-आंधी के साथ हुई बारिश से कई खलिहानों में रखी हुई प्याज की फसल भीग गई। बेमौसम होने वाली बारिश से प्याज खराब होने की संभावना है। विदित हो कि बड़ी संख्या में अभी भी कई ऐसे किसान थे जिनके खलिहानों में प्याज रखा है। जबकि जिन किसानों ने अभी तक प्याज बेचा नहीं था वह प्याज को ढेर लगाकर अपने खलीहनो में ही रखे हुए है। अब बारिश होती है तो प्याज के इन ढेरों के खराब होने की संभावना नकार नही जा सकते। बहरहाल वर्षा से क्षेत्र के प्याज उत्पादक किसानों के बीच संशय है।

प्याज का सुरक्षित भंडारण करे

इस सबंध में उद्यानिकी विभाग के एसडीओ सुरेश इनवाती ने बताया कि, पेटलावद क्षेत्र में 432 हेक्टेयर में प्याज लगाया गया था। अभी प्याज खेतो से निकलकर खलिहानों में रखा है। जिन किसानों के प्याज खलिहान में है उनको सुरक्षित जगह भंडारण करना चाहिए। उनके रखरखाव का विशेष ध्यान रखे। अगर और बॉरिश होती है तो इसकी क्वालिटी ओर सड़कर खराब हो सकती है।

एक की सुविधा से सैकड़ों को परेशानी, बीच सड़क पर माल लोड करने पर लग जाता है जाम

माही की गूंज,थांदला।

नगर में आजकल माल बाहर दिखाने के लिए व्यापारी अपनी दुकानों के बाहर माल जमाते-जमाते बीच सड़क पर भी माल जमाने लगे है। बड़े-बड़े व्यापारियों में पन्नीवालें, फर्नीचर, बर्तन, कपड़े आदि सब कुछ अब बीच सड़कों पर जमने लगा है। तो मैकेनिक भी बीच सड़कों पर ही बैठ कर गाड़िया सुधारने लगे है। नगर के व्यस्ततम पिपली चौराहा हो, कुम्हार वाड़ा, भंसाली चौराहा, आजाद चौक का यह ग्रहण अब जवाहर मार्ग में भी लग गया है। एक दूसरे की बुराई कहो या दुहाई देते ये व्यापारी नगरीय प्रशासन तक को कोसने लगते है व उन्हें ही दोष देने लगते है कि उनके कारण नगर की यह स्थिती बन गई है। बड़े व्यापारियों के खिलाफ कुछ करने की नगरीय प्रशासन की हिम्मत नही है, तो छूट भैयन नेताओं और भू-माफिया जो कि अधिकारी, कर्मचारी को उधारी के दम पर अपना माल भी बेचते हैं ताकी उन्हें कोई कुछ नहीं बोले। इन्हीं कारणों से पुलिस प्रशासन के आला अधिकारी,कर्मचारी कुछ नहीं बोलते हैं। इन बडे व्यापारी के हौसलें बड़े हुए हैऔर मनमर्जी से अपनी दुकानों के आगे चार पहिया वाहनों को घंटों खड़ा रखवाकर यह माल सामान भरवाते है और यातायात व्यवस्था बिगाड़ते हैं। यह सब होता है थांदला नगर के सभी व्यस्ततम मार्गों में जहाँ से अधिकांश नगर की आबादी, ग्रामीणजन, विभिन्न विभागों के कर्मचारी या अधिकारी तक इन्ही मार्गों से होकर गुजरते है। लेकिन अफसोस मन मसोस कर बेतरतीब खड़े वाहनों में लोड होते माल को देखकर मन ही मन गाली बकते हुए आगे निकल जाते है लेकिन कोई भी नगर में व्याप्त अतिक्रमण पर एक्शन लेना नही चाहता। आखिर एक कि सुविधा के लिए अनेकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। आखिर ऐसा पंगु प्रशासन कब मर्दानगी दिखाते हुए नगर में व्याप्त अतिक्रम को हटाने की हिम्मत जुटा पायेगा। यह नगर के हर नागरिक यहाँ तक कि अतिक्रमणकारियों के मन का भी सवाल है जो दूसरों के कारण अपना माल भी सड़कों पर रखे हुए है।

संपादकीय

एआई की बादशाहत

पहले ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की ताकत को लेकर दुनिया में तमाम तरह की शंकाएं हों, लेकिन एक बात तय है कि आने वाले वक्त में यह क्रांतिकारी बदलावों की वाहक बनने जा रही है। यह लगातार नई ताकतवर तकनीकों को जन्म दे रही है। इसी कड़ी में एआई तकनीक की गुणवत्ता से लैस सर्च इंजन के सामने आने की बात कही जा रही है है। कहा जा रहा है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित यह सर्च इंजन कालांतर गूगल के सर्च इंजन की बादशाहत को चुनौती दे सकता है। ओपनएआई द्वारा निर्मित इस सर्च इंजन की कभी भी घोषणा की जा सकती है। बताया जाता है कि इस कार्य में ओपनएआई ने बड़ी संख्या में गूगल के विशेषज्ञों को इस प्रोजेक्ट के लिये अपने अभियान में शामिल किया है। निश्चित रूप से इसके सक्रिय होने से कई तरह के बदलाव देखने में आएंगे। दरअसल, इस सर्च इंजन को लेकर इसलिए भी उम्मीदें बढ़ चुकी हैं क्योंकि ओपनएआई का दूसरा उपक्रम चैटजीपीटी पहले ही दुनिया में धूम मचा चुका है। इसकी सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2022 के अंत में शुरू हुए चैटजीपीटी के अब तक दुनियाभर में दस करोड़ मासिक उपयोग करने वाले हैं। कहा जा रहा है कि ओपनएआई के नये सर्च इंजन के अस्तित्व में आने से चैटजीपीटी की क्षमताओं का भी विस्तार होगा। यह माइक्रोसॉफ्ट समर्थित ओपनएआई की नई कामयाबी होगी। जिससे कालांतर ज्ञान की तलाश में इंटरनेट पर सर्च इंजन का प्रयोग करने वाले जिज्ञासुओं को सटीक जानकारी मिल सकेगी। निश्चित रूप से सर्च इंजन से मिलने वाली जानकारी महज तकनीकी नहीं होनी चाहिए। अब चाहे मूल पाठ हो या अनुवाद उसमें मौलिकता की महक होनी ही चाहिए। निश्चित रूप से जानकारी तार्किक होने के साथ ही आसान भी होनी चाहिए। ऐसे में आने वाले समय में इंटरनेट जगत में नए एआई आधारित सर्च इंजन से नई क्रांति की उम्मीद की जा रही है।

दुनिया में सबसे युवा और प्रतिभाओं के देश भारत को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित व्यवस्था में अपनी पकड़ बनाने के लिये नई पहल करनी होगी। अमेरिकी कंपनियों माइक्रोसॉफ्ट, गूगल आदि तमाम कामयाब कंपनियों में भारतीय मेधा अपना परचम लहरा रही है। इन्हीं कंपनियों के उत्पाद भारत का आर्थिक दोहन कर रहे हैं। निस्संदेह, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अपने खतरे हैं। हमारा मुकाबला एक ताकतवर तकनीक से है। विकास के लिये इसकी जरूरत भी है,लेकिन इसके खतरों से भी सावधान रहने की जरूरत है। भविष्य में ताकतवर देशों द्वारा इसके दुरुपयोग की संभावनाएं भी कम नहीं हैं। ऐसे में सावधानी के साथ इस दिशा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ कदमताल करने की भी है। लेकिन बाजार इसका उपयोग हमारे दोहन के लिये न कर सके। इसके नियमन के लिये सख्त कानून लाये जाने की जरूरत है ताकि आम लोगों के हितों की रक्षा हो सके। यह ऐसी आग व ऊर्जा है, सावधानी से उपयोग करें तो बेहद उपयोगी है ,लापरवाही हो तो बहुत घातक भी है। सरकारों को मौजूदा व्यवस्था में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खतरों के प्रति चिंतित भी होना चाहिए। इसके नियमन के लिये सख्त कानून बनाये जाने चाहिए। इसका उपयोग मानव की भलाई के लिये हो तो अच्छी बात है, लेकिन इसका इंसान के काबू में रहना भी जरूरी है। पश्चिमी जगत के विशेषज्ञ भी चेता रहे हैं कि यदि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के खतरों के लिये खुद को तैयार नहीं कर पाए तो मानव सभ्यता के लिये यह घातक साबित हो सकता है। यह तथ्य विचारणीय है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिये यदि हम मशीनों को इंसानी सोच, उसी तरह कार्य करने व फैसले देने की क्षमता दे देंगे तो दुनिया के लिये कई तरह के खतरे पैदा होंगे ही। निश्चित रूप से भारत जैसे देश में जिसकी आबादी दुनिया में नंबर एक हो चली है, हर हाथ को काम देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के कितने खतरे हो सकते हैं, इसको लेकर भी देश के नीति-नियंताओं को गंभीरता से सोचना होगा।

करोड़पति जन सेवक और अधनंगी जनता

बात राजनीयति के इर्दगिर्द ही रहती है। रहना भी चाहिए, क्योंकि मुद्दा है जहाँ, राजनीति है वहां। आज का मुद्दा है कि, दो जून रोटी के लिए सरकार पर निर्भर 85 करोड़ कि आबादी वाले विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में जनसेवक किसे होना चाहिए और किसे नहीं? क्या आजादी के 77 साल बाद भी ये लोकतंत्र केवल और क्रेल धनपतियों के लिए है। आम आदमी की इसमें हिस्सेदारी की मुमानियत है?

लोकसभा चुनाव के चार चरणों के बाद प्रत्याशियों की मालिई हालत के बारे में पढ़-सुनकर मन हुआ कि आज इसी मुद्दे पर बात की जाए। हम हैरान हैं, जग हैरान है कि पिछले एक दशक से देश के भाग्यविधाता बने काशी यानि बनारस के भाजपा प्रत्याशी के पास कुल जमा ले-देकर 3 करोड़ की सम्पत्ति है। जिला निर्वाचन अधिकारी के यहां नामांकन पात्र के साथ नास्ति किये गए हलफनामे के मुताबिक भाजपा प्रत्याशी नरेंद्र मोदी के पास 2022-23 में कुल आमदनी 23 लाख 56 हजार 080 रुपये थी। मोदी की कुल संपत्ति 3 करोड़ 02 लाख 06 हजार 889 है। जाहिर है कि मोदी जी ने दस साल में खुद कुछ नहीं खाया भले ही तमाम लोगों को खाने दिया और देश से बाहर जाने दिया।

मोदी के प्रमुख प्रतिद्वंदी और रायबरेली से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे राहुल गांधी के पास 20 करोड़ रूपये कि सम्पत्ति है। अकेले वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान कुल आमदनी 1 करोड़ 2 लाख और 78 हजार रुपये थी। राहुल गांधी के पास 9 करोड़ से अधिक की चल संपत्ति और 11 करोड़ से अधिक की अचल संपत्ति है। निश्चित तौर पर मोदी जी कि विरासत राहुल की विरासत से न केवल सियासत के मामले में बल्कि पैसे के मामले में भी कमजोर है, फिर भी देश-दुनिया में मोदी का जोर है। मजे की बात ये है कि, एक आदमी पिछले दस साल में हवाई जहाज से नीचे नहीं उतरा और दुसरे ने पूरा मुल्क पैदल नापने के अलावा कोई काम नहीं किया फिर भी दोनों करोड़पति है। भारत के लोकतंत्र में ही ये मुमकिन है।

मेरे पास हालाँकि देश के तमाम नाम-चिन्ह नेताओं यानि जनसेवकों की सम्पत्ति का व्यौरा है। लेकिन मै सबका जिक्र नहीं कर सकता। आपकी दिलचस्पी है तो आप केंचुआ की वेबसाइट पर जाकर सभी कि कुंडली हंगाल सकते हैं। मै तो केवल उन प्रत्याशियों का हवाला दे रहा हूँ जो अकूत सम्पत्ति के मालिक हैं फिर भी चुनाव लड़कर जनता की सेवा करना चाहते हैं। इन करोड़पति जनसेवकों के प्रति हम गरीबों का मन कृतग्यता से लबालब है। सोचता हूँ कि यदि ये अरबपति, करोड़पति और लखपति जनसेवक न होते तो इस देश के लोकतंत्र का जनता का क्या होता?

जनसेवा का व्रत लेकर रजतपट की बदनाम दुनिया से सियासत में कदम रखने वाली कंगना रनौत को उसी

तरह वालीवुड की क्वीन कहा जाता है जैसे किसी जमाने में फूलनदेवी को बैंडिट क्वीन कहा जाता था। दोनों कि अपनी सुंदरता है और अपनी-अपनी फैन फॉलोइंग है। फूलन को जाने दीजिये क्योंकि वे अब किसी स्वर्ग में विराजती हैं लेकिन हिमाचल के मंडी लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी कंगना कम से कम 90 करोड़ रूपये की मालकिन है। इतना धन लोकतंत्र में लोकसेवा किये बिना भी कमाया जा सकता है, वो भी केवल अपनी कला के बूते पर। कंगना राजनीति में आकर घाटे का सौदा कर रहीं है या नहीं ये भगवान जाने लेकिन देश को जानना चाहिए कि कंगना के पास क्या है और क्या नहीं है?

12वीं पास बॉलीवुड अभिनेत्री और बीजेपी कैंडिडेट कंगना रनौत के पास कैश 2 लाख रुपये है और तमाम बैंक खातों, शेयरों-डिबेंचर्स और ज्वैलरी समेत अन्य को जोड़कर आलीशान घर, गाड़ियां और जूलरी के अलावा एक्ट्रेस के पास बैंक में भी करोड़ों रुपए जमा हैं। कंगना के कुल 8 बैंक अकाउंट हैं। लेकिन आजतक किसी ईडी या सीबीआई ने कंगना के बैंक खाते नहीं खंगाले क्योंकि उन्होंने राजनीयति से नहीं अपने परिश्रम से कमाया है।

कंगना ने हलफनामा देकर जिला निर्वाचन अधिकारी को बताया है कि उनके पास 91.50 करोड़ रुपए की संपत्ति है। आलीशान घर, गाड़ियां और जूलरी के अलावा एक्ट्रेस के पास बैंक में भी करोड़ों रुपए जमा हैं. मुंबई में कंगना के अलग-अलग बैंक खाते में ढाई करोड़ से ज्यादा रुपए मौजूद हैं। कंगना रनौत के पास मुंबई में 7 और मंडी में एक, यानी कुल आठ बैंक अकाउंट हैं, जिनमें कुल मिलाकर 2 करोड़ 55 लाख 86 हजार 468 रुपए जमा हैं। आईडीबीआई बैंक में एक्ट्रेस के दो खाते हैं जिनमें से एक में एक करोड़ सात लाख और दूसरे में 22 लाख जमा है। कंगना का बैंक ऑफ बड़ौदा में भी एक खाता है जिसमें 15,189,49 रुपए जमा हैं।

राकेश अचल

हमारे लोकतंत्र में जनसेवा के लिए चुनाव लड़ने वाले तमाम ऐसे प्रत्याशी हैं जिनके पास मोदी, राहुल या कंगना से भी सौ गुना ज्यादा समपत्ति है। हमारा लोकतंत्र किसी धनकुबेर को चुनाव लड़ने से नहीं रोकता। किसी की सम्पत्ती की जांच नहीं करता, फिर भी देश को लूटने या बनाने के आरोपी अमीरों की उदारता है कि वे सीधे चुनाव नहीं लड़ते। वे इलेक्टोरल बांड के जरिये पैसा देकर लोगों को, पार्टियों को चुनाव लड़वाते हैं। ये वे लोग हैं जो (बकौल मोदी) राहुल गांधी के यहां टेम्पो में भर-भरकर रुप्या पहुंचते हैं।

अभी तक उपलब्ध जानकारी के मुताबिक़ अकूत सम्पत्ति के मालिकों के बीच सबसे गरीब उम्मीदवार कट्टा आनंद बाबू हैं, जो कि आंध्र प्रदेश के बापटला संसदीय क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। 32 साल के आनंद बाबू पोस्ट ग्रेजुएट है। इनके खिलाफ कोई भी आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। इनकी कुल चल संपत्ति 7 रुपये है, जबकि अचल संपत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं है। इसके अलावा इनके ऊपर 2.5 लाख रुपये का कर्ज भी है। मुझे पता है कि ये देश कभी भी आनंद बाबू को अपना जन प्रतिनिधि नहीं चुनेगा। इस देश में आंध्र प्रदेश की गुंटूर सीट से टीडीपी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी ही चुने जायेंगे। चंद्रशेखर पेम्मासानी के पास कुल संपत्ति 5,705 करोड़ रुपये से अधिक की है।

भारत के इस अजब-गजब लोकतनत्र में प्रत्याशी जितने अजब-गजब हैअन मतदाता भी उतने ही अजब-गजब है। वे आनंद जैसों को नहीं पेम्मासानी जैसों को ही चुनते हैं। मतदाता कभी किसी से ये सवाल नहीं पूछता कि उसके पास आखिर अकूत दौलत आई तो आई कहाँ से? वैसे भी लोकतांत्र के ताजा दौर में सवाल करने की इजाजत किसी को है नहीं।

चीन कर रहा ऊंची मूंछ से व्यापार भी और वार भी

धंधा और झगड़ा दोनों अलग-अलग काम हैं। जो लोग लड़ते हैं, मारधाड़ में बिजी रहते हैं, वो धंधा अच्छा नहीं कर सकते। जो लोग धंधा बढ़िया करते हैं, वो लड़ाई-झगड़े में पड़ते नहीं हैं।

आलोक पुराणिक

चीन की आफत यह है कि उसे धंधा भी करना है और नक्शेबाजी भी करनी है, मूंछ भी दिखानी है दुनिया को।

भारत और चीन के बीच जमकर कारोबार हो रहा है, इतना हो रहा है कि भारत-अमेरिका के बीच जितना कारोबार हुआ था, उससे भी ज्यादा कारोबार भारत और चीन के बीच हुआ।

चीन गलवान भी कर देता है कारोबार भी करता जाता है। चीन एक दिन हुंकारता है, फिर दूसरे दिन चीनी कंपनियां कहती हैं कि हमें कारोबार करने दिया जाये इंडिया में। पाकिस्तान का मसला साफ है, पाकिस्तान का काम खालिस आतंक मारधाड़ है, पाकिस्तान वाले कहीं भी दावा न करते कि उन्हें धंधा करना है। पाकिस्तान वालों को दो ही काम आते हैं- एक आतंक-मारधाड़, दूसरा भीख मांगना। पाकिस्तान के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, आर्मी चीफ सब भीख मांगने जाते हैं अमेरिका चीन जापान और भी न जाने कहां-कहां। पाकिस्तानी आर्मी ट्रेनिंग में सेना अफसरों को भीख की ट्रेनिंग दी जाती होगी।

पर चीन इतना बड़ा देश है कि सिर्फ मारधाड़ से काम नहीं चलता, धंधा भी करना होता है। मारधाड़ करते हुए धंधा करना बहुत मुश्किल हो गया है। या तो धंधा ही कर लो या मारधाड़ ही कर लो। दोनों करो, तो हाल चीन जैसा हो जाता है। सुबह गुंडागर्दी करो, शाम को फिर फेरी लगाते घूमो- ले लो मोबाइल ले लो, कार ले लो, बढ़िया माल, सस्ता सुंदर टिकाऊ। बोलो, क्या ले आऊं।

अमेरिका भी इस आफत से गुजर चुका है। अमेरिका शाणा मुल्क है। अमेरिका मारधाड़ अपनी जमीन पर नहीं करता। अमेरिका की सारी मारधाड़ उसकी जमीन से दूर होती है। अमेरिका गाजा पट्टी, फिलिस्तीन में लड़ता है। पर अमेरिका में कुछ मारधाड़ न होती। चीन की आफत यह है कि मारधाड़ उसकी सीमा पर आ जाती है। मारधाड़ घर में घुस जाये, तो टेंशन हो जाती है। अमेरिका दादागिरी अपने मुल्क से दूर करता है या करवाता है। चीन यह नहीं कर सकता।

चीन-भारत का कारोबार लगातार चल रहा है। कारोबार जब तेज होता है, तो लड़ाई स्थगित हो जाती है। भारत-पाकिस्तान का कारोबार अगर ठीक-ठाक चल रहा होता, तो शायद मारधाड़ कम हो जाती। पर आफत यह है कि पाकिस्तान के साथ कारोबार हो नहीं सकता, क्योंकि पाकिस्तान के पास कारोबार करने के लिए सिर्फ आतंक है, जिसकी ग्लोबल मार्केट में मांग नहीं है।

फेक लाइक्स और फॉलोअर्स का खेल

इंटरनेट की वजह से पूरी दुनिया ग्लोबल विलेज में तब्दील हो गयी है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स दुनियाभर के लोगों को आपस में जोड़ने का काम कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की लोकप्रियता और यूजर्स के एक्टिव होने की दर पिछले कुछ सालों में लगातार बढ़ी है। ऐसे में पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर्स की बाढ़-सी आ गई है। मगर इन सबके बीच बड़े पैमाने पर नकली फालोअर्स वाले इन्फ्लुएंसर्स का बहुत बड़ा खेल हो रहा है, जिससे आम लोग अपना नुकसान कर बैठते हैं।

पिछले दिनों इंग्लैड के पोर्ट्समाउथ विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक शोध मे पाया कि धोखेबाज अपने फर्जी सामानों को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर की पॉपुलैरिटी और भरोसे का फायदा उठा रहे हैं, जिससे कस्टमर्स नकली प्रोडक्ट खरीद बैठते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया पर सक्रिय 16-60 साल की उम्र के लगभग 22 प्रतिशत कस्टमर्स ने इन्फ्लुएंसर्स के द्वारा प्रमोट किए गए सामान खरीदे, जो नकली थे। 'बहुत सी कंपनियां ऐसी भी हैं जो किसी इन्फ्लुएंसर को कहती हैं कि आप हमारे फलाना प्रोडक्ट का अपने वीडियो में जिक्र करके उसको खरीदने का लिंक डाल दीजिए। अब फेक फॉलोअर्स वाले इन्फ्लुएंसर्स पैसे के लिए बिना प्रोडक्ट को प्रयोग किए प्रमोट करते हैं और बाद में ग्राहकों को पता चलता है कि वो आइटम या तो नकली है या खराब क्वालिटी का है।

दरअसल, बड़ी सोशल मीडिया कंपनियां धांधली रोकने में नाकाम रही हैं। दूसरे नेटवर्क की तुलना में ट्विटर ने ज्यादा फेक अकाउंट पहचाने और हटाए। ट्विटर ने खरीदे गए आधे लाइक और रिट्वीट हटाए। अविश्वसनीय कंटेंट हटाने के मामले में यूट्यूब सबसे खराब पाई गई। फेसबुक फर्जी अकाउंट बनाने और ब्लॉक करने में सबसे अच्छा साबित हुआ लेकिन उसने फर्जी कंटेंट बहुत कम हटाया। इंस्टाग्राम में गड़बड़ी करना सबसे आसान और सस्ता रहा। सच तो यह है कि फर्जीवाड़ा करने वाले लोग बड़ा पैसा कमाते हैं। धांधली करने वाले ये लोग मेजर प्लेटफॉर्म पर खुलेआम अपने विज्ञापन करते हैं। सोशल मीडिया पर लाखों पोस्ट को प्रभावित किया गया।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पेड प्रमोशन के जरिये इन सेलिब्रिटीज की खूब कमाई होती है। लोग अपना ज्यादा से ज्यादा समय मोबाइल की स्क्रीन पर बिताते हैं। इनमें से ज्यादातर योगदान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बिताए गए समय का होता है। ऐसे में अक्सर हम फेसबुक या इंस्टाग्राम स्क्रॉल करते समय कोई ऐड देख लेते हैं। विज्ञापन में दिखाए

गए प्रोडक्ट्स को देखकर कभी-कभी उस प्रोडक्ट के बारे में और भी ज्यादा जानने की इच्छा होती है। डिजिटल एडवर्टिजमेंट पूरी तरह से इसी पर टिका हुआ होता है। सोशल मीडिया या अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दिखाए जाने वाले एडवर्टिजमेंट के जरिये भी हम प्रोडक्ट्स खरीदने के लिए तत्पर होते हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में करीब 8 करोड़ सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर है। तकनीकी विशेषज्ञों के अनुसार, इसमें तेजी से इजाफा हो रहा है। लेकिन चिंता की बात ये है कि इस तेजी के पीछे फेक फॉलोअर्स और व्यूज का चलन भी तेजी से बढ़ रहा है। नए-नए लोग जल्दी से बड़ा बनने के चक्कर में पैसे देकर अपने फॉलोअर्स बढ़ाते हैं। सच बात यह है कि आज जो लोग इन्फ्लुएंसर हैं, उसमें से करीब 10 प्रतिशत ही अपनी मेहनत से बिना प्रमोशन का पैसा दिये यहां तक पहुंचे हैं। ये वो इन्फ्लुएंसर हैं, जो पुराने समय ये अब तक जगह बनाए हुए हैं, उस दौर में कंटेंट से ही लोग फॉलोअर बढ़ा सकते थे। बचे 90 प्रतिशत में से 40 से 45 प्रतिशत वो लोग हैं, जो जिस साइट पर होते हैं, उसी पर अपना प्रमोशन करते हैं और फॉलोअर्स बढ़ाते हैं। लेकिन बाकी जो 45-50 प्रतिशत इन्फ्लुएंसर कहलाते हैं, तो कहीं न कहीं फेक फालोअर्स, लाइक्स और व्यूज को खरीदते हैं। दरअसल हर कोई जल्दी इन्फ्लुएंसर बनना चाहता है। चाहते हैं, किसी तरह मोनेटाइजेशन हो जाए, हमें बड़ी कंपनियां अपने ब्रैंड प्रमोशन के लिए कॉल करें। दूसरे, वो लोग हैं जो फेमस हैं, लेकिन कोई प्रतियोगिता में उनसे आगे है तो उनसे भी आगे निकलने के लिए वह फेक फॉलोअर्स, लाइक या व्यूज खरीदते हैं। इससे आम लोगों का बड़ा नुकसान हो जाता है।

डॉ. शशांक द्विवेदी

रिपोर्ट ने सोशल मीडिया नेटवर्क पर क्लिक, लाइक और कॉमेंट बेचने वाली कंपनियों के सामने इंटरनेट कंपनियों की कमजोरी पर एक बार फिर लोगों का ध्यान खींचा है। सोशल नेटवर्क के सॉफ्टवेयर सबसे अधिक लोकप्रिय पोस्ट को प्राथमिकता देते हैं। इससे पैसा देकर जनरेट की गई गतिविधि को प्रमुख स्थान मिलता है। पैसे वाले लोग या कथित बड़े सेलिब्रिटी फेक फॉलोअर्स के खेल का बड़ा हिस्सा हैं।

चुनाव सामग्री जमा कर घर लौट रहे कर्मचारियों की बस हुई दुर्घटनाग्रस्त

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में शांतिपूर्ण मतदान संपन्न होने के बाद मंगलवार सुबह एक बस हादसा हो गया। सुवासरा मंदसौर रोड पर राठौर कॉलोनी के पास बस और ट्राले की भिड़ंत में चुनावी ड्यूटी से वापस अपने घरों की ओर जा रहे बस में सवार सात कर्मचारी घायल हुए और एक होमगार्ड जवान की घटना में मौत हो गई, जबकि दो गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिन्हें सुवासरा प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया था।

दुर्घटना की जानकारी मिलते ही सुवासरा विधायक हरदीप सिंह डंग, सुवासरा के शिक्षक अन्य लोग चिकित्सालय पहुंचे एवं सहयोग किया। वही बाकी गंभीर घायलों की मंदसौर जिला अस्पताल रैफर किया गया था।

बताया जा रहा है की ये कर्मचारी चुनावी सामग्री मंदसौर जमा करवाने के बाद ड्यूटी से वापसी शामगढ़ जा रहे बस में सवार 7 शिक्षक कर्मचारी घायल हो गए, वही दो गंभीर रूप से घायल को सुवासरा प्राथमिक उपचार के बाद जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया है। घायलों की सूची मे राजेश मोहन लाल 43 शामगढ़, रामगोपाल पिता कन्हेयालाल राठोर शामगढ़, अनिल पिता राधेश्याम तिवारी शामगढ, श्रवण जैन शामगढ, कैलाश पिता गोवर्धन लाल मुजावदिया शामगढ़, राजेश पिता देवी प्रसाद श्रीवास्तव शामगढ़, दिप्ती पति राजेंद्र श्रीवास्तव शामगढ घायल हुए हैं। वही गंभीर घायल मे गोपाल मागूसिह बावड़ी खेडा चंदवासा, तेजमल पिता चिरंजीवी लाल मेघवाल पचपहाड़ भवानीमंडी शामिल है जिन्हें आगे रैफर कर दिया गया है। थाना प्रभारी कमलेश प्रजापति ने बताया की इस दुर्घटना मे एक होमगार्ड जवान की मौत हो गई है, जवान मनोहर सिंह पिता प्रभु सिंह 34 वर्ष राजस्थान के राजसमंद जिले का रहने वाला था।

घटना के बाद जिला चिकित्सालय पहुंचे कलेक्टर

कलेक्टर दिलीप कुमार यादव एवं पुलिस अधीक्षक अनुराग सुजानिया ने जिला अस्पताल पहुंचकर बस दुर्घटना में घायल चुनावी कर्मचारियों के हाल-चाल पूछे तथा सिविल सर्जन एवं सीएमएचओ को निर्देश दिए की सभी कर्मचारियों का बेहतर तरीके से इलाज किया जाए।

उपमुख्यमंत्री ने ट्वीट कर जताया दुःख

उपमुख्यमंत्री और मल्हारगढ़ विधायक जगदीश देवड़ा ने ट्वीट कर कहा कि, मंदसौर जिले के सुवासरा के निकट चुनाव ड्यूटी के सेवारत कर्मचारियों को लेकर लौट रही बस और ट्रॉले की टक्कर में एक होमगार्ड जवान की मृत्यु और कर्मचारियों के घायल होने का समाचार दुःखद है। दिवंगत जवान के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर परिवारजन के प्रति संवेदना प्रकृट करता हूं। घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना है। स्थानीय अधिकारियों को घायलों की पर्याप्त उपचार व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश प्रदान किए है।

चुनाव ड्यूटी से लौट रहे होमगार्ड जवान की सड़क दुर्घटना में हुई मौत

मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में सीतामऊ-सुवासरा मार्ग पर मंगलवार को बस के एक खड़े ट्रक से टकरा जाने पर बस में सवार एक होमगार्ड जवान की मौत हो गई और सात अन्य लोग घायल हो गए। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि हादसा जिला मुख्यालय से लगभग 65 किलोमीटर दूर सीतामऊ- सुवासरा मार्ग पर तब हुआ जब जवान मतदान केंद्रों पर ड्यूटी करने के बाद लौट रहे थे।

मध्य प्रदेश की मंदसौर लोकसभा सीट के लिए सोमवार को मतदान हुआ। सुवासरा पुलिस थाना प्रभारी कमलेश प्रजापति ने बताया कि बस ने खड़े ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी। मृतक होमगार्ड की पहचान राजस्थान निवासी मनोहर लाल (33) के रूप में हुई है। अधिकारी ने बताया कि घायल लोगों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है और दुर्घटना के बाद बस चालक मौके से भाग गया। आगे की जांच जारी है।

बेटे ने सरिए से पीट-पीटकर मां-बाप को मार डाला, पड़ोसियों ने बताई वजह

मुरैना।

मुरैना में एक शख्स ने पीट-पीटकर अपने माता-पिता की हत्या कर दी। घटना के वक्त दोनों घर में सो रहे थे। इसी दौरान आरोपी ने लोहे की रॉड से उन पर हमला कर दिया और दम निकलने तक उन्हें पीटता रहा। वारदात के बाद आरोपी बेटा घर से फरार हो गया, जिसके बाद पुलिस ने टीमें बनाकर उसकी तलाश शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि आरोपी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है।

यह वारदात मंगलवार रात माता बसैया पुलिस थानाक्षेत्र के कुतवार गांव में हुई। पुलिस के मुताबिक आरोपी का नाम हरेंद्र शर्मा है, जिसकी उम्र 35 साल है। इस वारदात को लेकर जानकारी देते हुए थाना प्रभारी जयपाल सिंह ने बताया कि आरोपी ने अपने पिता ओमप्रकाश शर्मा (70) और मां उर्मिला (65) पर उस समय लोहे की रॉड से हमला कर दिया, जब वो दोनों सो रहे थे। इस दौरान बुरी तरह पिटाई से उनकी मौत हो गई। हालांकि पुलिस फिलहाल इस वारदात की वजह को लेकर कुछ ठीकठाक नहीं बता पा रही है।

पड़ोसियो ने बताई आरोपी की हरकतें

वारदात के बाद पूछताछ के दौरान आसपास के लोगों ने पुलिस को बताया कि आरोपी हरेंद्र मानसिक रूप से बीमार है और वो हर रोज पैसों को लेकर अपने माता-पिता से झगड़ता था। लोगों की मानें तो वह पहले भी माता-पिता पर हमला कर चुका था।

आरोपी हरेंद्र अविवाहित है। जब आरोपी माता-पिता को मार रहा था, उसी दौरान उसके छोटे भाई डैनी ने बीच-बचाव करने की कोशिश की, तो आरोपी उसे भी मारने के लिए दौड़ पड़ा, जिसके बाद उसने भागकर अपनी जान बचाई। इसके बाद उसने इस घटना के बारे में अपने बड़े भाई पंकज को फोन पर बताया। पंकज की सूचना पर पुलिस उनके घर पहुंची। वारदात के बाद दोनों के शव को जिला चिकित्सालय लाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

रेलवे ने न्यायालय में कहा, दोनों अंडर ब्रिज आवागमन के मार्ग नहीं

माही की गूंज, मंदसौर।

रेल्वे फाटक कमांक 150 सी के स्थान पर गीता भवन के पास व रेल्वे फाटक क्रमांक 151 बी के स्थान पर मिड इंडिया के पास रेल्वे द्वारा बनाया गया अण्डरब्रीज जो कि आम पब्लिक के लिए आवागमन का मार्ग है जिसमें साल भर पानी भरा रहता है तथा कई बार पानी भरा रहने से दोनो अण्डरब्रीज में कांजी जमा होने से कई बार दो पहिया वाहन चालक आये दिन गिरने से हादसे होने से विनोद सालवी, महेश कुमार मोदी, महेश कुमार समन्दर, इसरार खान अभिभाषक आदि ने जनलोक उपयोगी सेवा में स्थाई अदालत में रेल्वे प्रबंधक मंदसौर एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी मंदसौर कलेक्टर मंदसौर के विरुद्ध याचिका प्रस्तुत की थी जिसमें नगर पालिका द्वारा अपने जवाब में दोनो अण्डरब्रीज के नीचे पानी भरा के निजात हेतु रेल्वे को जिम्मेदार बताया और नगर पालिका द्वारा बताया कि मोटर विद्युत पप्प लगाकर पानी निकासी की व्यवस्था नगर पालिका द्वारा कर रखी है और रेल्वे द्वारा अपने जवाब में बताया कि दोनो अण्डर ब्रीज रेल्वे के नियमानुसार ब्रीज व पुल के नीचे आवागमन एंव आम रास्ता के रुप में उपयोग किये जाने का कोई प्रावधान नहीं है और सुरक्षा के हिसाब से उक्त

बीज के रास्ते का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है इसी तरह बोहरा खेडी लोहे वाला अण्डरब्रीज रोड पर भी नीचे आवागमन की अनुमति नही होने के संबंध में और नगर पालिका प्रशासन एवं कलेक्टर मंदसौर और रेल्वे अधिकारीयो के मध्य हुए अनुबंध दिनाक 03 अगस्त 2018 के अनुसार पानी निकासी की व्यवस्था का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व नगर पालिका मंदसौर का है इसलिए पानी भराव व पानी निकासी के लिए रेल्वे उत्तरदायि नही है।

पानी निकासी की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए नगर पालिका का उत्तरदायित्व है जवाब पेश किया हैं लेकिन रेल्वे स्टेशन प्रबंधक द्वारा नगर पालिका प्रशासक मंदसौर एंव रेल्वे अधिकारी के मध्य हुए दिनांक 03 अगस्त 2018 का अनुबंध लोकउपयोगी अदालत में प्रस्तुत नहीं किया है और ना ही दोनो अण्डरब्रीज एवं बोहराखेडी वाला अण्डरब्रीज के नीचे आवागमन एवं आम रास्ते के उपयोग के संबंध में रेल्वे का कोई नियम होने के संबंध मे कोई नियमावली प्रस्तुत नहीं की। जिस पर मंगलवार को सुनवाई के समय अध्यक्ष लोक उपयोगी सेवा मंदसौर द्वारा आवेदकगणो को रेल्वे की बोहराखेडी वाले लोहे की पुल का विस्तृत फोटो ग्राफ एवं रेल्वे स्टेशन प्रबंधक मंदसौर को अण्डरब्रीज के नीचे आम पब्लिक के लिए आवागमन एवं रास्ता निकलने के लिए नही होने एवं कलेक्टर एवं रेल्वे अधिकारीयो के मध्य हुए अनुबंध को सुनवाई दिनांक 24 मई 2024 को प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया है।

स्थापना दिवस महोत्सव में जिनेन्द्र देव की निकली रथयात्रा

माही की गूंज, मंदसौर।

श्री महावीर जिनालय के 142वें स्थापना दिवस के दो दिवसीय समारोह के तहत मंगलवार को जिनेन्द्र प्रभु की रथयात्रा निकाली गई। बैंड बाजों व महावीर के जयकारों के साथ रथयात्रा जिनालय परिसर से प्रारंभ हुई। रथयात्रा में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा को पालकी में विराजित कर श्रावकों ने नगर भ्रमण कराया।

डॉ. चंदा भरत कोठारी ने जानकारी देते हुए बताया, रथयात्रा गणपति चौक, बड़ा चौक, धानमण्डी, उतारा, सदर बाजार, घण्टाघर व शुक्ला चौक होते हुए पुनः महावीर जिनालय पहुंची, जहाँ जिनेन्द्र देव का अभिषेक व शांतिधारा की गई। शांतिधारा का लाभ डॉ अंकुर पाटनी, राजकुमार गोधा, सौरभ बड़जात्या, राजेश बडजात्या व सुरेश जैन आदि ने प्राप्त किया। जलाभिषेक पंकज काटिवाल, अजीत बण्डी, अर्पित डोसी आदि ने किया। सभी मंगल क्रियाएं पं आनंद जैन शास्त्री ने सम्पन्न करवाई। रथयात्रा में स्थान-स्थान पर श्रावकों ने श्रीजी के समक्ष श्रीफल व अर्घ्य समर्पित किए। महिलाओं ने रथयात्रा के मार्ग में भक्ति नृत्य व गरबा करते हुए भगवान के समक्ष श्रद्धा व्यक्त की।

जिनालय अध्यक्ष जयकुमार बड़जात्या व सचिव डॉ. संजय गांधी ने बताया कि, 2 से 9 जून तक सकल दिगम्बर जैन समाज के बच्चों व बड़ों के लिए धार्मिक ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सांगानेर जयपुर के विद्वतजन प्रतिदिन विभिन्न सत्रों में धर्मज्ञान का शिक्षण प्रदान करेंगे।

रात में खुली नींद, पानी समझ पी लिया एसिड, 6 वर्षीय मासूम की मौत

इंदौर।

इंदौर से दिल दहला देने घटना सामने आई है, जहां 6 वर्ष के मासूम की मौत अनजाने में एसिड पीने की वजह से हो गई। बच्चा रात को खाना खाने के बाद अपनी मां के पास सोया था, इस बीच जब उसे प्यास लगी तो उसने वहीं रखी एसिड को पानी की बॉटल समझकर उससे एसिड पी लिया। इसके बाद करीब हफ्तेभर उसका इलाज चला और सोमवार को अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया। वो अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था।

यह दुखद घटना इंदौर के बाणगंगा इलाके में रहने वाले कैलाश अहिरवार के घर पर हुई। जहां 5 मई की रात उनके मासूम बेटे माखन (6) ने पानी समझकर गलती से एसिड पी लिया था। घरवालों का कहना है कि उन्होंने उस बॉटल को उसी दिन दोपहर में फेरीवाले से खरीदा था।

दो बार माता-पिता से मांगा पानी

घटना के बारे में जानकारी देते

हुए बच्चे के पिता ने पुलिस को बताया कि, उस रात घर में दाल-बाटी बनी थी। खाना खाने के बाद हम सब सो गए, माखन मेरे साथ पलंग पर सो रहा था, इसी दौरान रात को प्यास लगने पर उसने मुझसे पानी मांगा तो मैंने उसे पिला दिया। इसके बाद वो नीचे उतरकर अपनी मां रचना के पास सो गया। रात करीब डेढ़ बजे उसे दोबारा प्यास लगी तो उसने मां से पानी मांग लिया, रचना ने उसे पानी पिलाकर सुला दिया।

तीसरी बार खुद उठकर पी लिया 'पानी'

रात करीब 3 बजे जब उसे फिर से प्यास लगी तो उसने पानी मांगने की बजाय खुद ही उठकर कूलर के पास रखी बॉटल से उसे पी लिया। लेकिन वो बॉटल एसिड की थी। इसके बाद उसे गले में जलन होने लगी तो उसने अपनी मां को उठाया और कहा कि मुझे जलन हो रही है और तेज उल्टी आ रही है। इसके बाद जब रचना उसे लेकर बाथरूम में पहुंची, जहां उल्टी में एसिड की गंध आने पर वो घबरा गई। इसके बाद उसने उससे पूछा तो बच्चे ने बॉटल से पानी पीने की बात बताई।

उल्टी से आई एसिड की गंध

फिर महिला भागकर बच्चे के पिता के पास पहुंची और बच्चे के गलती से एसिड पीने के बारे में बताया। इसके बाद वो दोनों रात में ही बच्चे को लेकर अस्पताल पहुंचे। जहां करीब 8 दिन चले इलाज के बाद बच्चे को नहीं बचाया जा सका। बच्चे के माता-पिता दोनों प्राइवेट जॉब करते हैं, उन्होंने 5 तारीख की दोपहर को ही घर की सफाई के लिए एसिड खरीदा था और उसे कूलर के पास रख दिया था। हालांकि बच्चे को इसकी समझ ना होने और दिखने में पानी जैसा होने की वजह से यह अनहोनी हो गई। माखन उनका इकलौता बेटा था, उसकी एक बड़ी बहन भी है। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद बच्चे का शव परिजनों को सौंप दिया।

आगरा कैंट-अहमदाबाद के मध्य चलेगी त्रिसाप्ताहिक सुपरफास्ट समर स्पेशल ट्रेन

माही की गूंज, रतलाम।

रेल मंडल के नागदा व रतलाम स्टेशन पर ठहराव के साथ आगरा कैंट-अहमदाबाद के मध्य त्रिसाप्ताहिक स्पेशल ट्रेन का संचालन किया जाएगा। 01920 अहमदाबाद-आगरा कैंट स्पेशल में टिकटों की बुकिंग 15 मई से शुरू हो चुकी है। ट्रेनों के ठहराव के समय और संरचना की जानकारी विभाग की वेबसाइट पर मिल सकती है।

01919 आगरा कैंट-अहमदाबाद स्पेशल 16 मई से 29 जून तक आगरा कैंट से प्रति मंगलवार, गुरुवार व शनिवार रात 11.30 बजे चलकर नागदा (7.35/7.37) व रतलाम (8.20/8.30) होते हुए आरंभिक स्टेशन से गाड़ी प्रस्थान के अगले दिन दोपहर 2.30 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी।

इसी प्रकार वापसी में 01920 अहमदाबाद-आगरा कैंट स्पेशल 17 मई से 30 जून तक अहमदाबाद से प्रति बुधवार, शुक्रवार व रविवार को शाम 5.30 बजे चलकर रतलाम (11.33/11.43), नागदा (12.30/12.32) होते हुए आरंभिक स्टेशन से गाड़ी प्रस्थान के अगले दिन सुबह 9.50 बजे आगरा कैंट पहुंचेगी।

इस ट्रेन का दोनों दिशाओं में फतेहपुर सिकरी, रूपवास, बयाना, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, कोआ, नागदा, रतलाम, गोधरा, छायापुरी व आणंद स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी व सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

दुल्हन 'गुलनाज' का खुल गया सारा राज, कैसे कुंवारों को लूटने वाली हसीना खुद फंस गई

माही की गूंज, शाजापुर/सीहोर।

अगर आप कुंवारे हैं और कोई पैसे लेकर आपकी शादी करवाने की बात कर रहा हो तो सावधान हो जाएं। वह पैसे लेकर आपकी शादी तो करवा देगा, लेकिन दो-तीन दिन बाद न तो आपकी बीवी मिलेगी और न ही घर में रखा आपका कीमती सामान। यह सारा काम फर्जी दस्तावेजों के जरिए किया जाएगा और आप तमाम कोशिशों के बाद भी उन तक नहीं पहुंच पाएंगे। मध्य प्रदेश के शाजापुर के सुन्दरसी थाने में एक ऐसा ही अनोखा मामला सामने आया है।

मध्य प्रदेश के सीहोर जिले की पुलिस ने एक रात की लुटेरी दुल्हन गैंग का भंडाफोड़ किया है। इस गैंग के 11 सदस्यों को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उनके पास से बड़ी मात्रा में लूटी गई सोने और चांदी की ज्वैलरी और नकदी बरामद की है। पुलिस ने इस मामले में 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरोह के लोग ऐसे युवाओं को तलाशते थे, जिनकी शादी नहीं होती है। फिर उनसे रुपए लेकर महाराष्ट्र की गुलनाज को दुल्हन बनाकर उनके यहां भेज देते थे। शादी के बाद एक-दो दिन तो गुलनाज वहां रहती थी और फिर वहां से रुपए और जेवर लेकर गुलनाज रफूचक्कर हो जाती थी।

शाजापुर जिले के सुंदरसी थाना क्षेत्र के गांव बागली में जब वह दुल्हन बनकर पहुंची तो वहां से भाग नहीं पा रही थी। ऐसे में गुलनाज ने अपने कथित पति के खिलाफ ही अपहरण और ज्यादती सहित अन्य धाराओं में प्रकरण दर्ज करवा दिया। जब मामले की जांच शुरू हुई तो पूरा मामला ही पलट गया। कोतवाली पुलिस ने 11 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस के अनुसार चार मई को गुलनाज ने शाजापुर जिले के सुंदरसी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई कि जसमत राजपूत और उसके साथी अशोक ने सीहोर के न्यायालय परिसर से उसका अपहरण कर लिया था और यहां उसे कैद कर उसके साथ ज्यादती की। घटनास्थल सीहोर का न्यायालय परिसर होने के कारण सुंदरसी पुलिस ने जीरो एफआईआर दर्ज कर मामला सीहोर

कोतवाली को भेज दिया था। जब पुलिस ने इस मामले में आरोपी जसमत को गिरफ्तार किया तो उसने बताया कि उसने डेढ़ लाख रुपए में गुलनाज को खरीदा है। इसकी स्टांप पर लिखा-पढ़ी भी हुई है। इसके बाद पुलिस ने जांच को आगे बढ़ाने के लिए गुलनाज को गिरफ्तार किया। यही नहीं स्टांप पर खरीदी के अनुबंध में जो गवाह जालम सिंह को गिरफ्तार किया तो पुलिस को पूरा मामला समझ में आ गया।

पुलिस ने जब गुलनाज और जालम सिंह से सख्ती से पूछताछ की तो उन्होंने यह बात कबूल ली कि वे इसी तरह से लोगों को शादी के नाम पर लूटते हैं। पुलिस ने गुलनाज के प्रेमी अंकित लोधा और उसके साथी अशोक मालवीय को भी गिरफ्तार किया। ये लोग गांव के ऐसे युवाओं को तलाशते हैं जिनकी शादी नहीं होती। गुलनाज को मनीषा बताकर बागली के जसमत को डेढ़ लाख में बेचते हुए उसकी शादी की थी। लेकिन गुलनाज उर्फ मनीषा का आशिक अंकित निवासी जीतापुरा थाना असनवरा जिला झालावाड़ राजस्थान उसका जीजा बनकर उसे लेने के लिए पहुंचा था। परिजनों ने मनीषा को भेजने से मना कर दिया था। उसके बाद दो बार और वह मनीषा को लेने पहुंचा, लेकिन जब जसमत ने मनीषा को भेजने से साफ मना कर दिया तो अंकित ने मनीषा को जसमत के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाने की सलाह दी। जिस पर गुलनाज उर्फ मनीषा ने जसमत के खिलाफ सुंदरसी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

गिरोह में भोपाल निवासी राजेंद्र नामदेव गुलनाज व राखी के अलग-अलग नाम से आधार कार्ड बनाता था। इसमें भोपाल का ही रईस खां उसका सहयोग करता था। राजेंद्र की फोटो कॉपी की दुकान पर लो लोग आधार कार्ड की फोटो कॉपी या प्रिंट निकलवाने आते थे उनके आधार कार्ड वह स्कैन कर लेता था। बाद में उनमें फोटो इनका लगाकर इन लुटेरी दुल्हनों की फर्जी पहचान बनाता था। पुलिस ने बताया मामले में जो फरियादी थी वह लुटेरी दुल्हन बनकर लोगों के साथ धोखाधड़ी करती थी। मामले में 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों ने दूसरे राज्यों में लोगों के साथ इसी तरह से धोखाधड़ी करने की संभावना है। हालांकि अभी उनकी पहचान नहीं हुई है। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

कलेक्टर ने हजारों वर्ष पुरानी 'बुलावा परंपरा' को आधुनिकता से जोड़ा और कर दिया कमाल

माही की गूंज, खरगोन।
ब्रजभूषण दसौंदी

क्या आपको याद है कि अपनी हिंदू सभ्यता में ÷बुलावा देना÷ एक अद्भुत परंपरा है। बुलावा यानी बहुत आग्रह के साथ किसी को बुलाना। याद कीजिए कि समाज में मंगल कार्यक्रम हो तो नाई बंधू या नावन मां घर-घर बुलावा देने जाते थे। यह ऐसी परंपरा है, जो भारत के गांव से लेकर शहर तक और लोगों के मन से लेकर हृदय तक से जुड़ी हुई है।

किंतु क्या कलेक्टर जैसा जिले का शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी इस परंपरा का सदुपयोग करते हुए कुछ करिश्मा कर सकता है...? यदि आपको लगता है नहीं, तो जरा इस अद्भुत कहानी को पढ़िए, आपको मजा आ जाएगा।

कहानी खरगोन जिले की है। इन दिनों यहां बतौर कलेक्टर पदस्थ हैं वरिष्ठ आइएएस कर्मवीर शर्मा। जिले का निर्वाचन अधिकारी होने के नाते इनके पास पूरे जिले में चुनाव व्यवस्थाओं की कमान है। पहले और दूसरे चरण में जब मतदान कम हुआ तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी तक सब चिंतित हो गए। चुनाव आयोग और जनता की भी अपनी चिंताएं थीं। लेकिन उसी दौर में खरगोन कलेक्टर कर्मवीर शर्मा ने चिंतित होने के बजाय एक अनूठा आइडिया सोचा और उस पर काम शुरू कर दिया। उन्होंने जिला प्रशासन की टीमें गठित कीं और जिले में बुलावा अभियान शुरू कर दिया। बुलावा अर्थात आम जनता को वोट देने के लिए न्योता। इसके

तहत प्रशासन की टीम घर-घर जाकर न्योता देने लगी। लोगों ने भी प्रशासनिक टीम की आवभगत की और कहीं सम्मान से बैठाकर चाय पिलाई, तो कहीं अपने दरवाजे पर आए अधिकारी को देख प्रणाम किया। आम लोगों के मन में अधिकारियों की छवि रहती है कि ये पढ़े-लिखे साहब हमारी कहां सुनेंगे। लेकिन खरगोन कलेक्टर की इस पहल ने लोगों का भाव बदल डाला। यह ऐसी पहल थी, जिसने प्रशासन और जनता के बीच की दूरी को पाट दिया और लोग प्रशासन के प्रति सद्भावना और सम्मान के भाव से भर गए। परिणाम यह हुआ कि आम जनता में जिम्मेदारी और सम्मान का भाव जाग्रत हुआ। वे बुलावा अभियान से जुड़े और वोट करने का निर्णय ले लिया। कलेक्टर की इस पहल का इतना बड़ा इंपैक्ट हुआ कि लोग चिलचिलाती धूप में भी अपने घरों से निकले और नतीजतन खरगोन में सबसे ज्यादा मतदान हुआ। कमाल यह भी हुआ कि चारों चरणों में सबसे ज्यादा औसत मतदान चौथे चरण में हुआ, जो कि 72.02 प्रतिशत रहा। और इस चौथे चरण में खरगोन 75.79 प्रतिशत के साथ सबसे ऊपर रहा।

एयर कंडीशंड दफ्तार छोड़कर धूप में नापा खरगोन

जिला निर्वाचन अधिकारी होने के नाते कलेक्टर को पूरे जिले में चुनाव की व्यवस्था करनी होती है। आमतौर पर कलेक्टर्स इसके तहत बैठकें लेते हैं, थोड़े-बहुत दौरे करते हैं और निर्वाचन आयोग को रिपोर्ट भेजते रहते हैं। किंतु खरगोन कलेक्टर ने कुछ अलग किया। वे कड़ी धूप में मैदान में उतर गए। इससे प्रशासन की टीम का हौसला तो बढ़ा ही, लोगों को भी लगा कि जब एक अधिकारी लोकतंत्र के सम्मान के लिए इतनी मेहनत कर सकते हैं, तो हम भी क्यों न घरों से निकलें। कलेक्टर की इस पहल और बुलावा अभियान ने माहौल बनाया और लोगों ने घरों से निकलकर खरगोन सीट पर मतदान 75.79 प्रतिशत तक पहुंचा दिया।

काश, ऐसे कलेक्टर हर जिले को मिलें

संविधान जब बना था, तब जैसे प्रशासन की कल्पना की गई थी, वैसा ही कुछ खरगोन प्रशासन ने लोकतंत्र के लिए कर दिखाया। कलेक्टर कर्मवीर शर्मा की यह मेहनत इतिहास में दर्ज तो होगी ही, साथ ही लोकतंत्र के ललाट पर किसी मंगल तिलक की भांति हमेशा सुशोभित होती रहेगी। आपका-हमारा भारत ऐसे ही कर्मठ अधिकारियों के परिश्रम से आगे बढ़ रहा है। काश! कर्मवीर शर्मा जैसे जनता के हित में निःस्वार्थ मेहनत करने वाले कलेक्टर देश के हर जिले को मिलें।

प्रधानमंत्री मोदी भी भीड़ देख चकित थे

इसी खरगोन में कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सभाएं भी हुईं। इसे बुलावा अभियान का असर कहें या कुछ और, किंतु खरगोन जिले में इन दोनों नेताओं की सभा में भी जनता खूब उमड़ी। विशाल जनमैदिनी देख प्रधानमंत्री मोदी ने भी यहां की सभा में कहा था, ÷मैं चकित हूं जी कि इतनी भीषण गर्मी में भी इतने लोग सभा में आए हैं। मैं जब संगठन में काम करता था, तो कहता था कि सुबह 10 बजे सभा मत रखो क्योंकि उस समय माताएं-बहनें घरों के काम में लगी रहती हैं और पुरुष भी अपने काम में जुटे रहते हैं। सुबह 10 बजे सभा करना मतलब लोहे के चने चबाने जैसा काम है। लेकिन मैं खरगोन की जनता को सौ-सौ सलाम करता हूं जी। यहां 10 बजे सभा हुई है और व्यवस्थाएं इतनी अच्छी हैं कि क्या बड़े और क्या बुजुर्ग, क्या माताएं-क्या बहनें, सब उमड़ पड़े हैं। मैं खरगोन की जनता को, यहां की व्यवस्थाओं को, यहां के संगठन और नागरिकों को प्रणाम करता हूं।

जहर पिया फिर पेड़ से कूदा युवक, अब आईसीयू में भर्ती

माही की गूंज, खरगोन।

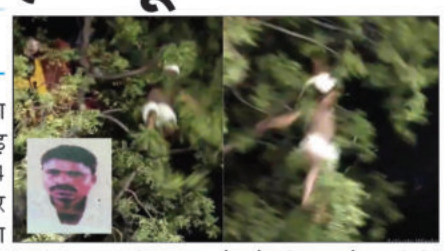

एक व्यक्ति का मौत पीछा नहीं छोड़ रही है। महज 24 घंटे में उसे दो बार मौत से लड़ना पड़ा। अब गंभीर हालत में आइसीयू में जिंदगी और मौत के बीच है। जिले के भगवानपुरा के पीपलझोपा के 45 वर्षीय फिफरिया पुत्र डेमा ने सोमवार को घर पर कीटनाशक पी लिया। स्वजन उसे बचाने के लिए जिला अस्पताल लाए। यहां वह मंगलवार रात को पेड़ पर चढ़ गया। बचाने के क्रेन का सहारा लेना पड़ा। पेड़ पर इधर, उधर जाने में वह गिर गया। गंभीरावस्था में आइसीयू में भर्ती किया है।

फिफरिया ने घर पर कीटनाशक पी लिया था। स्वजन उसे जिला अस्पताल लाए थे। यहां से वह घर जाने की जिद करने लगा, लेकिन स्वजन नहीं माने। क्योंकि उसकी हालत गंभीर थी। इसके बाद वह स्वजनों को घर जाने का बोलकर जिला अस्पताल स्थित पेड़ पर चढ़ गया। यहां मौजूद लोगों ने देखा और जिला अस्पताल पुलिस को सूचना दी। इसके बाद नगर पालिका की क्रेन बुलाई गई। क्रेन पर दो कर्मचारियों को बैठाया और पेड़ तक पहुंचे।

इसी दौरान फिफरिया के स्वजन भी पेड़ के पास आ गए। उन्होंने कहा आप क्रेन में बैठ जाओ या नीचे आ जाओ, लेकिन वह नहीं माने। चार घंटे तक फिफरिया पेड़ पर ही इधर से उधर, चढ़ता रहा। कर्मचारियों ने थक हार कर अंतिम बार उसे समझाने का प्रयास किया और क्रेन को उसके पास ले गए। इसी दौरान फिफरिया नीचे गिर गया।

पुलिस और अस्पताल प्रबंधन ने जिला अस्पताल के आइसीयू में भर्ती किया। इसके बाद डाक्टरों ने उसे इंदौर रेफर करने की सलाह दी। स्वजनों ने जिला अस्पताल में ही इलाज करवाने की सहमति दी है। पत्नी दशमा व बेटों ने कहा सोमवार रात को कीटनाशक पीने के बाद यहां अस्पताल में भर्ती किया। रात में वो अचानक से बोला मैं घर जा रहा हूं। इसके बाद पेड़ पर चढ़ गया। फिफरिया को उतारने पड़ोसी सुनील भी पेड़ पर चढ़ा। उसकी बात भी नहीं मानी। स्वजनों ने बताया कि फिफरिया की मानसिक स्थिति थोड़ी खराब है।

क्रेन के सहारे पास पहुंचे समझाइश के दौरान गिरा

क्रेन पर मौजूद दो कर्मचारी पेड़ पर खड़े फिफरिया के पास पहुंचे। यहां उन्होंने पांच मिनट तक बातचीत की। इसके बाद कर्मचारी ने फिफरिया को हाथ देकर क्रेन में बैठने को कहा। इसी दौरान फिफरिया पीछे हुआ और नीचे गिर गया। पेड़ के नीचे मौजूद पुलिसकर्मियों ने उसे तत्काल जिला अस्पताल में भर्ती किया। पुलिसकर्मी भी चादर लेकर खड़े थे, लेकिन वह नीचे गिर गया। प्रत्यक्षदर्शी रामलाल कुशवाह का कहना है कि फिफरिया को चार घंटे तक क्रेन से उतारने के प्रयास किया। वह नीचे गिर गया। स्वजन भी चार घंटे तक समझाते रहे। उसका पड़ोसी सुनील भी पेड़ पर चढ़ गया था। मामले में चौकी प्रभारी सुदर्शन कुमार भी पहुंचे थे।

स्काउट गाईड के विद्यार्थियों को दिया जा रहा है हस्तकला का प्रशिक्षण

माही की गूंज, बड़वानी।

शक्ति सिंह चौहान सहायक आयुक्त जिला कमिश्नर स्काउट के निर्देशन में सेंट मेरी विद्यालय में गाइड कैप्टन अंशुता मसीह भारत स्काउट एण्ड गाइड जिला संघ बड़वानी गणेश श्रीवास्तव संगठन आयुक्त द्वारा स्काउट गाइड विद्यालय के छात्र-छात्राओं से हस्तकला प्रशिक्षण शिविर क्लाइमेट चेंज पर चर्चा पॉलिथीन को बंद करना उससे होने वाले दुष्परिणाम पर चर्चा की। साथ ही सिकलसेल एनीमिया जैसी बीमारियों से बचने के उपाय लक्षण के बारे में बताया। स्काउट गाइड एवं अन्य छात्र छात्राओं को पुराने सामान से घर की सजावट के सामान बनाना एवं प्लास्टर ऑफ पेरिस से खिलौने बनाना एवं पेंटिंग ड्राइंग करना एवं कबाड़ से जुगाड़ कर सामान बनाना भी बताया गया।

विश्व परिवार दिवस पर संगोष्ठी का हुआ आयोजन

माही की गूंज, बड़वानी।

भगवान बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय, पाटी में विश्व परिवार दिवस 15 मई के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. परवेज मोहम्मद ने बताया कि प्रारंभ में मनुष्य का जीवन एकाकी था फिर विवाह नामक संस्था और इसी से परिवार की इकाई का जन्म हुआ अर्थात मनुष्य सबसे पहले एक पारिवारिक प्राणी है और इसी से वह सामाजिक बनता है। संयुक्त परिवार के बारे में बताया कि हमारे संयुक्त परिवार, विद्यालय और औषधालय दोनों को समाहित करते हैं। साथ ही परिवार और जलवायु परिवर्तन के सहसंबंध भी व्यक्त किए। प्रशासनिक अधिकारी डॉ. मंशाराम बघेल चर्चा में भाग लेते हुए बताया कि परिवार बरगद के पेड़ के समान होता है जिसकी छत्रछाया में संताने संस्कार, शिक्षा प्राप्त करती है, बड़े बुजुर्गों की शिक्षा से बच्चों का विकास होता है। महाविद्यालय के डॉ. नारायण पाटीदार ने संयुक्त परिवार के महत्व को बताते हुए कहा कि परिवार की जिम्मेदारी एकल परिवार में ज्यादा बढ जाती है। संयुक्त परिवार में सब साथ में लेकर उसका निर्वाह कर लेते हैं। प्रो. दिनेश ब्राह्मणे ने कहा कि बच्चों में सहनशीलता, संस्कार संयुक्त परिवार में आसानी से विकसित हो जाते हैं। बड़े परिवार का मान सम्मान होता है और यह हमारी पुरातन संस्कृति का एक अंग है। प्रो. राजू औसारी ने गोष्ठी में अपने विचार रखते हुए कहा की वर्तमान के एकल परिवार अपने आर्थिक विकास अपनी प्रगति को ध्यान में रखकर बनते जा रहे हैं लेकिन जो संस्कार जो शिक्षा जो सम्मान संयुक्त परिवार में होता है वह एकल परिवार में संभव नहीं । जमीन में बंट जाने से जोत छोटी हो जाती है जिससे संकट भी बढ़ते हैं और पर्यावरण का नुकसान भी होता है। भरत सिंह चौहान ग्रंथपाल अधिकारी ने कहा की परिवार में बड़े बुजुर्ग के आशीर्वाद से सब कार्य आसानी से हो जाते हैं। सुख-दुख में सब साथ मिलते हैं इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के छात्राओं सपना लक्ष्मी और छात्रों सुनील विष्णु सहित सभी ने भाग लिया और विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी के संचालक कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनिल पाटीदार परंपरागत संयुक्त परिवार के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में सचिन वर्मा, कनसिंह, सखाराम और विक्रम आदि उपस्थित थे।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने किया ईवीएम स्ट्रांग रूम का निरीक्षण

माही की गूंज, बड़वानी।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. राहुल फटिंग ने एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय बड़वानी में लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर बने ईवीएम स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया। इस दौरान कलेक्टर ने स्ट्रांग रूम की सीसीटीवी कैमरे से की जाने वाली निगरानी को भी देखा। निरीक्षण के दौरान उपस्थित सुरक्षा जवानों को निर्देशित किया कि राजनैतिक दलो के अभ्यर्थी, उनके प्रतिनिधि एवं आमजन कोई भी व्यक्ति अगर उक्त दोनों टीवी में स्ट्रांग रूम के सीसीटीवी कैमरा की निगरानी को देखने आये तो उन्हे देखने दिया जाये एवं यहां पर रखे हुए रजिस्टर में आने वाले व्यक्ति के नाम की प्रविष्टि करवाते हुए हस्ताक्षर जरूर करवाये जाये।

उल्लेखनीय है कि, लोकसभा निर्वाचन के तहत एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय बड़वानी के परिसर विधानसभावार अलग-अलग स्ट्रॉंग रूम बनाये गये है। स्ट्रांग रूम की 3 लेयर सुरक्षा व्यवस्था सीआरपीएफ बटालियन के सशस्त्र बल के जवान कर रहे है। सशस्त्र बल के यह जवान 4 जून तक निरंतर स्ट्रॉंग रूम की सुरक्षा 24 घण्टे करते रहेंगे।

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजना बनाकर उसे निरंतर क्रियान्वित करें

माही की गूंज, बड़वानी।

यदि अभी तक आपने अपने कॅरियर का कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है तो सबसे पहले यह कार्य सम्पन्न कर लीजिए। अपनी क्षमताओं, संसाधनों और रुचियों के अनुसार जीवन का उद्देश्य बनाइये। आप निर्धारित नही कर पा रहे हैं तो काउंसलर्स से संपर्क कीजिए। कॅरियर तय हो जाने पर उस पर पूरी तरह से फोकस कीजिए। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजना बनाकर उसे निरंतर क्रियान्वित कीजिए। ये बातें शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कॅरियर काउंसलर डॉ. मधुसूदन चौबे ने सहभागी विद्यार्थियों को परामर्श देते हुए कहीं। यह आयोजन प्राचार्य डॉ. दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यकर्ता प्रीति गुलवानिया और वर्षा मुजाल्दे ने बताया कि इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को सेल्फ कॅरियर परसेप्शन के बारे में बताया गया। उनके समक्ष कॅरियर के अनेक विकल्प प्रस्तुत किये गये ताकि उन्हें अपने कॅरियर का लक्ष्य निर्धारित करने में सहुलियत हो। विद्यार्थियों की पर्सनल काउंसिलिंग भी की जा रही है। इससे वे अपनी व्यक्तिगत इच्छाएं और सीमाएं बताकर अच्छे से डिस्कस कर पाते हैं।

16 मई से 30 जून तक ग्रीष्मकालीन खेल प्रशिक्षण शिविर

माही की गूंज, खरगोन।

डीजीपी पुलिस विभाग और संचालनालय खेल एवं युवा कल्याण विभाग मप्र. भोपाल के आदेशानुसार ग्रीष्मकालीन खेल शिविर का आयोजन किया जाना है। इसके लिए 15 मई बुधवार को पुलिस कंट्रोल रूम में एडिशनल एसपी श्री तरूणेन्द्र सिंह बघेल के मार्गदर्शन बैठक आयोजित की गई। एडिशनल एसपी श्री बघेल ने खेल विभाग और पुलिस विभाग के सयुंक्त रूप से खेल शिविरों का आयोजन डीआरपी लाइन और स्टेडियम मैदान पर करने कहा। शिविर 16 मई 2024 से 30 जून 2024 तक आयोजित किया जायेगा। खेल शिविर का उद्घाटन 16 मई को प्रातः 08 बजे किया जाएगा। बैठक में जिला खेल अधिकारी पवी दुबे, डीएसपी वर्षा सोलंकी, रक्षित निरिक्षक देवेन्द्र सिंह परिहार, सुबेदार मुकेश हायरी, खेल विभाग के समन्वयक और कोच उपस्थित थे।

तेंदुए ने फिर किया पशुओं पर हमला, ग्रामीणों में दशहत

माही की गूंज, खरगोन।

क्षेत्र के नर्मदा अंचल में पिछले दो-तीन महीने से फिर तेंदुए की आमद हुई है। क्षेत्र में सक्रिय हुआ तेंदुआ मूक मवेशियों पर हमला कर रहा है। इन हमलों में अब तक तीन बकरियां को खा चुका है। सोमवार-मंगलवार शाम नर्मदा तट के बोथु गांव के जंगल में घास चर कर गांव लौट रही, श्याम केवट की बकरी पर रास्ते में तेंदुए ने हमला कर दिया। घर नहीं लौटने पर सुबह जंगल में ढूंढने गए। श्याम व ग्रामीणों को बकरी के अंग एवं इधर-उधर बिखरे पड़े दिखाई दिए। आस-पास तेंदुए व शावक के पगमार्क भी दिखाई दिए। श्याम ने तत्काल वन अधिकारियों को सूचना दी।

मौके पर पहुंचे वन विभाग के बीट प्रभारी सोहेल खान व टीम ने पगमार्क देखे। मौके पर पंचनामा बनाया। इससे पहले गांव के ही मिथुन आदिवासी की बकरी को भी तेंदुए ने निशाना बनाया था। लगातार हो रही घटना के बाद ग्रामीणों में दहशत का माहौल निर्मित हो गया है।

मंगलवार की दोपहर श्याम, मिथुन, भीमा व अन्य ग्रामीणों ने वन कार्यालय कसरावद पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। हालांकि यहां कोई जिम्मेदार अधिकारी नहीं मिले। ग्रामीणों ने वन कर्मियों से बोथु के जंगल में पिंजरा लगाने की मांग रखी। उन्होंने कहा कि खेतों में खरीफ फसल की बोवनी शुरू हो गई है, जिससे मवेशी अब जंगल में ही चरने जाने लगे हैं। तेंदुए की मौजूदगी से भय का वातावरण निर्मित हो गया है।

गांव तक पहुंचा तेंदुआ

श्याम केवट, भीमा, मिथुन सहित अन्य ग्रामीणों के अनुसार तेंदुआ अब निर्भीक हो गया है। वह गांव तक पहुंचने लगा है। बीती रात तेंदुए ने बाडे में बंधे गाय के बछड़े पर भी हमला करने का प्रयास किया। गांव के नन्नू बारूड के बाड़े में गाय के बछड़े पर तेंदुए ने पंजे से हमला किया। इस दौरान गाय ने भी हुंकार भारी तो तेंदुआ बछड़े को छोड़कर भाग गया। तेंदुए के गांव तक पहुंचने से ग्रामीण दहशतजदा है। उन्होंने सुरक्षा की मांग की है। बताया गया है, कि तेंदुए की मौजूदगी के चलते पहले भी गांव के जंगल मे पिंजरे लगाए गए थे।

पहले भी पकड़े थे तेंदुए

बोथु के जंगल से पहले भी तेंदुए पकड़े गए थे। कुछ वर्ष पहले यहां के जंगल में तेंदुए के कुनबे का बसेरा था। इस दौरान वन विभाग की रेस्क्यू टीम ने लंबे समय तक मशक्कत कर तेंदुओं को पकड़ा था। इसके लिए पिंजरों के अलावा सीसीटीवी कैमरे की भी मदद ली गई थी। नाइट विजन कैमरों की मदद से तेंदुए के कुनबे का पता चला था। अब फिर दो-तीन महीने से तेंदुए की आमद बताई जा रही है। शावक के पगमार्ग देखे जाने के बाद फिर परिवार सहित क्षेत्र में तेंदुए की मौजूदगी मानी जा रही है।

ओलावृष्टि से धार जिले के केसुर व सादलपुर में दिखा कश्मीर जैसा नजारा

माही की गूंज, धार।

क्षेत्र में सोमवार शाम को ओले के साथ वर्षा हुई। देर तक वर्षा होने की वजह से बिजली भी गुल रही। वर्षा के दौरान आाकाशीय बिजली भी गरजती रही। पानी सड़कों से बहकर निकल गया।सादलपुर में चुनाव के लिए लगाए टेंट-तंबू भी उखड़कर गिर गए। टेंट में लगी हुई सीलिंग के अंदर ओले जमा हो गए। इस वजह से भारी वजन के चलते टेंट-तंबू उखड़ गए। कंडारिया में भी तेज वर्षा हुई।

बदनावर क्षेत्र में सोमवार दोपहर 12 बजे तक करीब 37 डिग्री तापमान होने से गर्मी अपने तेवर दिखा रही थी, लेकिन इसके बाद मौसम ने अचानक से करवट ली और आसमान में बादल छा गए। तेज हवा के साथ कहीं-कहीं जमकर वर्षा हुई। पश्चिमी क्षेत्र में शादियों में लगे पंडाल व टेंट हवा में उड़ गए। ग्राम पंचायत संदला के बूथ क्रमांक 31 भारारूण्डी में मतदान केंद्र के बाहर लगा टेंट आंधी में उड़कर जमीन पर गिर गया। इधर, नगर में दोहपर तीन बजे बूंदाबांदी हुई, तो मुलथान में कुछ देर के लिए तेज वर्षा हुई। ग्राम कोद में शाम छह बजे के बाद हुई वर्षा ने सड़कों को भीगो दिया। बेमौसम वर्षा से मौसम में ठंडक घुल गई, जिससे गर्मी से तो राहत मिली है, लेकिन उमस बढ़ गई है।

राजगढ़ में 10 मिनट तक झूमकर बरसे बदरा, गिरे ओले

राजगढ़ में दिनभर तेज गर्मी और उमस के बाद सोमवार शाम को बादल झूमकर आए और जोरों से बरस पड़े। वर्षा के साथ चने के आकार के आले भी गिरे। यह सिलसिला करीब 10 मिनट तक चला। इससे मौसम खुशनुमा हो गया। वर्षा से सड़कें पानी से तर हो गईं। सुबह से आसमान में बादलों ने डेरा जमा लिया था।

इससे सूर्य देवता अपने तेवर नहीं दिखा पाए। करीब 12 बजे सूर्य बादलों के चंगुल से छुटकर बाहर निकले तो लोगों को तेज तपन का अहसास हुआ। इसके बाद शाम को अचानक आसमान में काले मेघों ने डेरा जमा लिया और करीब 10 मिनट तक ओले के साथ वर्षा हुई। इससे लोगों को गर्मी से राहत मिली।

सोमवार को दिन के पारे में करीब तीन डिग्री की गिरावट दर्ज की गई। जबकि रात के तापमान में कोई उलटफेर नहीं हुआ। सोमवार को दिन का तापमान तीन डिग्री गिरकर 36 डिग्री पर आ पहुंचा तो रात का तापमान 26 डिग्री पर यथावत रहा।

हवा के कारण बिजली के खंभे व तारों पर गिरा पेड़

बगड़ी में सोमवार दोपहर में अचानक मानसून परिवर्तन हुआ और तेज हवा-आंधी के साथ वर्षा हुई। इससे मुख्य बाजार में अस्पताल के बाहर स्थित पेड़ टूटकर बिजली के खंभे व तारों पर गिर गया। इससे सड़क पर बिजली की चिंगारियां गिरने लगी। साप्ताहिक हाट होने के साथ मतदाताओं की आवाजाही बनी हुई थी। संयोग से कोई बड़ी दुर्घटना नहीं हुई। बिजली के खंभे पर पेड़ गिरने से विद्युत आपूर्ति बंद हो गई थी। कुछ देर बाद विद्युत कंपनी के कर्मचारी पहुंचे और विद्युत तारों के ऊपर से पेड़ हटाने का कार्य शुरू किया। वर्षा के कारण करीब एक घंटे तक मतदान प्रभावित हुआ।

बगड़ी फाटे पर भी बीच सड़क पर एक पेड़ गिर गया

था, जिससे कुछ देर के लिए यातायात बाधित हुआ। एक दिन पूर्व रात में तेज वर्षा के साथ ओलावृष्टि हुई थी। हवा-आंधी की वजह से कई मतदान केंद्रों के बाहर लगे टेंट गिर गए थे। इससे मतदान केंद्र पर मौजूद कर्मचारियों को मशक्कती करनी पड़ी। ग्राम आली में एक दुकान भी हवा में उड़कर दूर खेत में जा गिरी। मियांपुरा में संतोष सिंगोड़ीया के मकान की चद्दरें हवा में पतंग जैसी उड़ गई। इससे वर्षा से घर का पूरा सामान गीला हो गया।

झाड़ियों में ढक गई आजाद की स्टेच्यू, प्रशासन को खबर नहीं

माही की गूंज, चं.शे. आजाद नगर।

चंद्रशेखर आजाद नगर (भाबरा) बस स्टैंड के ठीक सामने हजारों रुपए की लागत से बनी अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की स्टेच्यू चारों ओर से झाड़ियों के चलते पूरी ढक चूकीं है। नगर परिषद के अधिकारीयों का इस ओर ध्यान नहीं जा रहा है। वहीं आजाद नगर भाबरा मे सड़क मार्ग पर बड़े-बड़े वक्षों की कटाई की जा सकती है तो अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद के स्टेच्यू के सामने के पेड़-पोधो की कटाई नहीं किये जाने से स्टेच्यू दिखाई नहीं दे पा रही हैं।

अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद स्टेच्यू का लोकार्पण होने के बाद आजाद की स्टेच्यू दूर से दिखाई देती थी जो बाहर से आने-जाने वाले आजाद की स्टेच्यू देख नमन करनें भी पहूंचते थे अब वो झाड़ियों में ढक चूकी है जिसके चलते आमजनों को सड़क मार्ग से दिखाई नहीं दे रही है। चारों तरफ़ से बड़े-बड़े वक्षों के बीच ढक चूकी है। साथ ही प्रशासन को मात्र राष्ट्रीय पर्व या आजाद के जन्मदिन व शहादत दिवस पर ही अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद याद आते हैं उसके बाद न सफाई ओर न ही देखरेख की जाती है। ऐसे में नगर परिषद, नगर में बने संगठनों के आवाज बुलंद करने से पहले आजाद के स्टेच्यू के सामने की झाड़ियों की कटाई कर देना चाहिए।

चुनाव खत्म होते ही एक्शन मोड़ में आए कलेक्टर

माही की गूंज, उज्जैन।

लोकसभा चुनाव निपटते ही उज्जैन कलेक्टर नीरज कुमार सिंह एक्शन मोड में दिखाई दिए। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक कर उन्हें स्पष्ट रूप से निर्देश दिए हैं कि, यदि राजस्व संबंधी किसी भी प्रकार के प्रकरण में लोगों को परेशान होना पड़ा तो इसका खामियाजा अधिकारियों को भुगतना पड़ेगा। कलेक्टर ने आदेश दिए हैं कि, जमीनों के बंटवारे, सीमांकन, नपती आदि में किसी आम व्यक्ति को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़े।

कलेक्टर नीरज कुमार सिंह ने प्रशासनिक संकुल भवन में बैठक का आयोजन किया। इस दौरान उन्होंने जिले के सभी पटवारियों को सख्त हिदायत दी कि आमजनों के कार्यों को पूरी तत्परता से करें। लोगों को अपने

कार्यों के लिए अनावश्यक परेशान ना होना पड़े। अक्सर यह देखने में आ रहा है कि पटवारियों द्वारा अज्ञात नंबरों से लोगों के फोन नहीं उठाए जाते हैं। शासकीय सेवक रूप में ऐसा आचरण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सभी पटवारी अपने निर्धारित मुख्यालय पर रहे, लोगों के फोन उठाएं और उनके कार्यों को गंभीरता से करें।

एसडीएम और तहसीलदार को दिए यह निर्देश

कलेक्टर नीरज कुमार सिंह ने बैठक में सभी एसडीएम और तहसीलदारों का निर्देश दिए कि हर सप्ताह बुधवार को अपने क्षेत्र के पटवारियों की बैठक आयोजित की जाए, जिसमें राजस्व प्रकरणों के निराकरण के निर्धारित फॉर्मेट में पटवारी रिपोर्ट की विस्तृत समीक्षा करें। राजस्व प्रकरण में 15 दिन से अधिक पटवारी रिपोर्ट लंबित रहने पर संबंधित पटवारी के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई की जाएं।

सीमांकन के प्रकरण में होगी सख्त करवाई

कलेक्टर ने निर्देश दिए हैं कि, सभी तहसीलदार सीमांकन के लंबित चरणों को चिन्हित कर उनमें डेट निर्धारित करें। इस माह के अंत तक सभी सीमांकन के लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण सुनिश्चित कराएं। सीमांकन से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने पर संबंधित के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हज यात्रियों के प्रशिक्षण, टीका-करण व स्वाथ्य परीक्षण हेतु शिविर का हुआ आयोजन

माही की गूंज, अलीराजपुर।

नगर के मध्य स्तिथ (मंसुरी-चौक) पर राज्य हज कमैटी भोपाल द्वारा नियुक्त किए गए हज सैवक मो. हुसैन मंसुरी (एमएस पाकीज़ा) के द्वारा हज यात्रियों के प्रशिक्षण, टीका-करण व स्वाथ्य परीक्षण हेतु शिविर का आयोजन कर समस्त हज यात्रियों को बधाई देते हुए सफल यात्रा हेतु प्रार्थना की गई। जिसमे हज यात्रीयो को बड़ी एलईडी पर चित्र दिखाकर मास्टर ट्रैनर द्वय हाजी सैय्यद ताहिर अली रतलाम व हाजी शाहिद निज़ामी थांदला के द्वारा एहराम, तवाफ़, मक्का, मदीना, मीना, मुज़्दल्फा, सफा, मरवाह, ज़मरात में होने वाले हज के छोटे से छोटे अरक़ानो के बारे में व यात्रा के समय एयरपोर्ट, ट्रेन, बस स्टेशन हवाई जहाज़ टैक्सी, ट्रेन, बिल्डिंग, लिफ्ट में भारतीय हज यात्रियों की सुरक्षा हैतु सम्पूर्ण एवं महत्वपूर्ण जानकारीया देकर यात्रियों की भोजन व्यवस्था मंसुरी जमाअत खाने में की गई।

एमएस पाकीज़ा द्वारा बताया गया कि, इस वर्ष ज़िले के मुम्बई इम्प्रबौकेशन पॉइंट से हज यात्रा पर जाने वाले कुल 27 कवँर हैड के कुल 70 यात्रियों में सबसे अधिक उम्र 80 वर्ष के शहर क़ाज़ी सैय्यद अफज़ल मियां है तो कम उम्र वाले 23 वर्षीय द्वय यास्मीन, मीनू क़ोशर व 24 वर्षीय आमिर अली खत्री है एवं अलीराजपुर से 27, जोबट से 15, खट्टाली से 9, भाभरा से 8, बखतगढ़ से 6, नानपुर से 2, इंदौर से 2 यात्री है। जिसमे महिला 35 तो पुरुष भी 35 है। प्रशिक्षण शिविर में पीटीओ वाले यात्रियो ने भी भाग लिया।

ज़िला टीकाकरण अधिकारी डॉ. प्रैम प्रकाश पटेल व शहरी नोडल अधिकारी डॉ. सचिन पाटीदार व एनएम द्वय लक्ष्मी भीण्डे व पिंकी रावत द्वारा क्यूएमएमवी मैनिन्जाइटिस व एसआईवी सिज़नल इन्फ्लुएन्जा टिके तथा स्वास्थ्य परीक्षण कर पौलियो की दवाई देकर हैल्थ कार्ड बुक पर सील व हस्ताक्षार कर यात्रीयो को दी गई।

उक्त कार्यक्रम में हाजी अमजद मंसुरी, हाजी अलाउद्दीन चन्देरी, इस्माइल मंसुरी, डॉ. सौयब मंसुरी, वसीम खान, अमिन मंसुरी, सादिक चन्देरी, अ. मजीद रंगरेज़, आरिफ फिट्वेल मंसुरी, आरिफ पठान, सलीम कुरैशी, फैज़ान, जिशान, रैहान मंसुरी पाकीज़ा का सराहनीय योगदान रहा।

भोजशाला की खुदाई में मिले स्तंभों के दो पाषाण आधार

माही की गूंज, धार। भोजशाला में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) द्वारा किए जा रहे सर्वे के उत्तर दिशा में खोदाई के दौरान स्तंभों के दो पाषाण आधार मिले हैं। इनका परीक्षण किया जाएगा और उनकी काल अवधि भी पता की जाएगी। जबकि भोजशाला के गर्भगृह क्षेत्र में खोदाई कार्य मंगलवार को भी जारी रहा। वहीं जो दीवारनुमा संरचना मिली है, उसमें दूसरी दीवार की गहराई अधिक होने से अभी नींव तक पहुंचने के लिए खोदाई जारी रहेगी।

मंगलवार को हिंदू समाज को भोजशाला में पूजा-अर्चना की अनुमति होती है। ऐसे में भोजशाला में सर्वे कार्य सुबह के सत्याग्रह के बाद भीतरी क्षेत्र में किया गया। जहां से दोनों पाषाण मिले हैं उस क्षेत्र में मिट्टी हटाने सहित खोदाई कार्य जारी है। वहीं गर्भगृह क्षेत्र में सभी ब्लाकों में खोदाई कार्य हो रहा है।

यहां पर जो दो दीवार मिली थीं, उसके आधार पर तलघर के होने का अनुमान लगाया गया है। इसी के चलते अधिक गहराई में खोदाई हो रही है। हिंदू पक्ष के गोपाल शर्मा का कहना है कि आधार स्तंभ मिलने से स्पष्ट है कि आक्रांताओं ने भोजशाला के मूल स्वरूप से काफी छेड़छाड़ की है। अब भोजशाला का सच सामने आएगा और अपने गौरव की पुनर्स्थापना के साथ भोजशाला मंदिर के रूप में स्थापित होगी।

दो बहनों की तालाब में डूबने से मौत, ग्रामीणों ने तालाब से बाहर निकाले शव

माही की गूंज, चं.शे. आजाद नगर।

बुधवार सबेरे तालाब में नहाने गई दो सगे भाईयो की लड़किया बेहड़वा तालाब में डूब गई। ग्रामीणों को खबर लगी तो ग्रामीणों ने शव को तालाब से बाहर निकाला। जानकारी के अनुसार रसीला पिता मगन मेडा उम्र 13 वर्ष और इंदिरा पिता सुभाष मेड़ा उम्र 10 वर्ष ग्राम बड़ा भावटा डूंगर फलिया सुबह 10 बजे घर से निकली थी। वह तालाब में नहाने चली गई। इस दौरान वे गहरे पानी में गई और डूब गई। उनके साथ छोटा भाई विजय भी था। बहनों को डूबता देखने के बाद भाई ने ग्रामीणों को सूचना दी। इसके बाद ग्रामीणों की मदद से तालाब से शव बाहर निकाला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मार्ग कायम किया।

बैंककर्मियों ने ही लूटा 42 लाख कैश, रातभर में चोर-पुलिस वाले खेल में पर्दाफाश

दमोह।

मध्य प्रदेश में पुलिस को फोन कर एक चौकीदार ने बताया कि बैंक में पांच नकाबपोश बदमाश घुसकर लाखों रुपए लूट लिए हैं। बदमाशों ने बैंक कर्मचारियों पर हमला भी किया है। यह सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। बैंक की ओर जाने वाली सड़क की नालियों में नोटों की गड्डियां गिरी पड़ी थीं। यह दमोह जिले की मंगलवार रात की घटना है। जांच में पता चला कि बैंक से 42 लाख रुपए से ज्यादा कैश लूटे गए हैं। लेकिन जब आरोपियों के बारे में पता चला तब सभी हैरान रह गए। दरअसल, तीन बैंककर्मियों ने मिलकर ही इस लूट की प्लानिंग बनाई थी। बैंककर्मी पुलिस को बार-बार यह बता रहे थे कि चोर कोई और है। लेकिन रातभर में ही चोर-पुलिस वाले खेल का पर्दाफाश हो गया।

चौकीदार निकला सरगना

एमपी पुलिस ने कुछ ही घंटों में इस बैंक लूट का खुलासा कर दिया। दरअसल, शिकायत करने वाला चौकीदार ही लूट का सरगना निकला। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। तीनों बैंक में नौकरी करते हैं। कैशियर, चौकीदार और एक अन्य कर्मचारी ने यह पूरी साजिश रची। यह गैसाबाद थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव की मध्यांचल ग्रामीण बैंक का मामला है।

रातभर में केस सॉल्व

दरअसल, मध्यांचल ग्रामीण बैंक के चौकीदार ने मंगलवार रात करीब आठ बजे पुलिस को फोन किया। उसकी पहचान रोहित विश्वकर्मा के रूप में हुई है। रोहित ने बताया कि पांच नकाबपोशों ने बैंक में हमला कर दिया। वे लाखों रुपए लूट कर भाग गए। बैंक में लूट की सूचना मिलते ही पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे। जांच शुरू की गई। साइबर पुलिस को एक्टिव किया गया।

नहीं मिला सीसीटीवी फुटेज

पुलिस के पहुचंने पर चौकीदार ने बताया कि बदमाश कट्टा लेकर बैंक में घुसे थे। उन्होंने बैंककर्मियों के साथ मारपीट की। एक कर्मचारी को कमरे में बंद कर दिया। इसके बाद वे एक बैग में कैश रखकर फरार हो गए। जांच में पता चला कि 42 लाख से अधिक रुपए गायब थे। पुलिस ने यह भी पाया कि सीसीटीवी फुटेज के डीवीआर गायब हैं। ऐसे में पुलिस को कोई सीसीटीवी फुटेज नहीं मिल सका।

खुद को किया जख्मी

जांच में पता चला कि चौकीदार दो अन्य बैंककर्मियों के साथ मिलकर इस घटना को अंजाम दिया। पुलिस ने 42 लाख रुपए जब्त कर लिए हैं। सीसीटीवी का डीवीआर भी मिल गया है। दरअसल, पुलिस को गुमराह करने के लिए बैंककर्मियों ने खुद के शरीर को जख्मी कर दिया था। इसके लिए वे कटर का इस्तेमाल किए थे। चौकीदार ने पुलिस को बताया कि बैंक मैनेजर लॉकर की चाबी छोड़कर चले गए थे।

नालियों में नोट की गड्डियां

पुलिस ने पाया कि बैंक के पास नाली में नोट की गड्डियां गिरी हैं। दरअसल, आरोपियों ने इसे जानबूझ कर गिराया था। जिससे यह लगे कि बदमाश जब कैश लेकर भाग रहे थे तब नोट गिर गया। लेकिन पुलिस को इस बात से बेहद हैरानी हुई कि देर शाम बैंक में पांच लुटेरे आए और आसपास किसी को भी कोई भनक नहीं लगी। साथ ही चौकीदार ने कहा था कि वे कैश को बैग में भरकर ले गए तो नालियों में पैसे कैसे गिरे। पुलिस को बैंककर्मियों पर शक हुआ। देर रात उनसे सख्ती से पूछताछ की गई। तीनों ने अपना अपराध कबूल कर लिया। दामोह पुलिस अधीक्षक श्रुतकीर्ति सोमवंशी ने बताया कि करीब 42 लाख रुपए बरामद कर ली गई है। तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

कानून के लम्बे हाथों से आखिर दूर क्यों काकनवानी चोरी की चांदी खरीदी का आरोपी पंकज वागरेचा...?

माही की गूंज, झाबुआ।

2 मई के अंक में माही की गूंज में प्रमुखता से ÷काकनवानी पुलिस संदेह के घेरे में चोरी की चांदी खरीदीने वाले मेघनगर के ज्वेलरी व्यापारी को बिना आरोपी बनाए आर्थिक सांठगांठ कर छोड़ा÷ शीर्षक के साथ प्रकाशित किया था। मगर उसके बाद भी मेघनगर के इस चोरी की चांदी खरीदने वाले ज्वेलर्स पंकज वागरेचा पर अभी तक ठोस कार्रवाई नही हुई और ये खुलेआम घूम रहा है। साथ ही साथ न ही काकनवानी थाने की थाना प्रभारी और जांच अधिकारी के विरुद्ध कोई कारवाई नही होना। ये दर्शाता है की किस तरह कानून के भी दो पहलू है। गरीबों के लिए अलग और अमीर व धन्नासेठों के लिए अलग।.अगर इस धन्नासेठ पंकज वागरेचा की जगह चोर ने साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 में किसी और सामान्य व्यक्ति का झूठा भी नाम ले लिया होता तो पुलिस उसे, उसी वक्त उठा कर धारा 411 का आरोपी बनाकर जेल भेज चुकी होती। मगर काकनवानी के सोने-चांदी के व्यापारी प्रवीण सोनी की दुकान में हुई चांदी चोरी के आरोपी के पंकज वागरेचा का नाम लिए जाने के बाद भी उसे काकनवानी पुलिस ने आर्थिक सांठगांठ कर छोड़ दिया ये पुलिस की दोहरी कार्यप्रणाली को तो दर्शाता ही है। साथ ही साथ जनता की नजर में खाकी की इज्जत को भी कम कर रहा है। आरोपियों से ऐसी पुलिसिया सांठगांठ से आम जनता का आर्थिक और शारीरिक नुकसान होता है। पुलिस अक्सर लूट,चोरी,ड्रग्स के प्रकरण में मुख्य आरोपियों की साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 में की गई स्वीकारोक्ति का इस्तेमाल अन्य आरोपियों तक पहुंचने की बजाए उनसे मोटा पैसा लेकर जसी मुख्य आरोपियों से ही दिखा देती है। काकनवानी में प्रवीण सोनी की दुकान में हुई चोरी में भी पुलिस ने यही खेल किया। मुख्य आरोपी की स्वीकारोक्ति के आधार पर पुलिस ने पंकज वागेरचा को उठाया तो जरूर मगर उसे आर्थिक सांठगांठ कर छोड़ दिया। इस तरह की पुलिसिया कार्यप्रणाली से चोरों, लुटेरों और चोरी का माल खरीदने वालों में ये संदेश जाता है कि, चाहे कितना भी बड़ा अपराध कर लो कुछ नही होता पैसे देकर छूट जायेंगे और यही लोग फिर आम लोगों के साथ बेखौफ होकर लूट,डकेती तो करते ही हैं बड़ी बड़ी चोरियों को अंजाम देते है। यही लूट चोरी का करोड़ों का माल खरीदकर पंकज वागरेचा जैसे लोग का मामलों में नाम आ जाने पर कुछ लाख रुपए देकर साफ बच निकलते हैं और फिर इन्ही कामों में लग जाते है। अगर पुलिस अधीक्षक चाहे तो माही की गूंज की खबर की पुष्टि के लिए उस दिन के मेघनगर व काकनवानी पुलिस थाने के सीसीटीवी फुटेज की जांच करवा ले या पंकज वागरेचा की मोबाइल लोकेशन की जांच करवा ले तो पूरे प्रकरण में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। पुलिस की इस आर्थिक सांठगांठ से पंकज वागरेचा को छोड़ दिए जाने से चोरी,लूट का कितना माल इस ज्वेलर्स द्वारा पूर्व में भी किन-किन से खरीदा गया है ये खुलासे नही हो पाए। जिस से आम जनता एवं पिडितो का चोरी,लूट का माल बरामद नही हो पाया और सब समय के गर्भ में दब कर रह गया।

काकनवानी पुलिस संदेह के घेरे में चोरी की चांदी खरीदने वाले मेघनगर के ज्वेलरी व्यापारी को बिना आरोपी बनाए आर्थिक सांठगांठ कर छोड़ा

2 मई को माही की गूंज में पंकाशित समाचार।

पुलिस अधीक्षक चाहे तो अभी भी हो सकती है ज्वेलर्स और जिम्मेदार पुलिस कर्मियों पर कार्रवाई

प्रवीण सोनी की घर हुई चोरी में चोरी का माल खरीदने वाले पंकज वागरेचा को पुलिस अधीक्षक चाहे तो अभी भी एक जिला स्तरीय जांच टीम बनाकर मुख्य आरोपी से गहन पूछताछ करवा उसकी स्वीकारोक्ति को आधार बनाकर सह आरोपी बना सकती है। अगर इस मामले में दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 173 का अंतिम प्रतिवेदन न्यायालय में लगा दिया गया हो, तब भी दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 173(8) में नए तथ्यों को आधार बनाकर पूरक चालान लगाकर पंकज वागरचा को आरोपी बनाया जा सकता है। साथ ही साथ इस प्रकरण में पंकज वागरेचा को छोड़ने वाले सभी जिम्मेदार पुलिस कर्मियों पर भी भी ठोस कार्रवाई की जानी चाहिए। जिस से आगे ऐसा ना हो और खाकी पर आम लोगों का यकीन बना रहे।

लोकसभा चुनावों के मतदान प्रतिशत के आंकड़ों ने राजनीतिक दलों के गणित बिगाड़े

सबके अपने-अपने दावे, हथपल्ले कुछ नहीं

4 जून को खुलेगा ईवीएम का पिटारा, तय होगा कौन जीता, कौन हारा...

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसूरी

यह कह पाना बहुत ही मुश्किल है कि, मतदान के यह आंकड़े किसकी ओर झुके है। मगर मतदान के इस आंकड़ें को लेकर हर राजनीतिक दल के अपने-अपने दावे है। हालांकि यह कोई नहीं जानता कि, कौन सिरमोर होगा मगर अंदाजे लगाए जा सकते है। राजनीतिक विशेषज्ञों की भी अपनी -अपनी राय है। हम यहां सिर्फ रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट की बात करें तो यहां के समीकरण हमेशा से ही उथल-पुथल रहे है। यहां कांग्रेस कई बार सत्ता में आई है तो भाजपा भी इस सीट को हथियाती रही है।

कहा तो यह जाता है कि, रतलाम क्षेत्र इस लोकसभा सीट का भविष्य तय करता है। इस बार रतलाम क्षेत्र को देखें तो यहां अच्छा खासा मतदान हुआ है। रतलाम शहर में 71.30 प्रतिशत मतदान रहा तो रतलाम ग्रामीण में 80.51 प्रतिशत मतदान रहा। वहीं सैलाना की अगर बात करें तो यहां 83.84 प्रतिशत मतदान हुआ है। हालांकि यह सारे आंकड़े 2019 के मुकाबले कम ही नजर आते है। हालांकि सैलाना में इन आंकड़ों में 0.35 प्रतिशत की ही गिरावट है। इसके अलावा रतलाम शहर और रतलाम ग्रामीण में लगभग 3-3 प्रतिशत का अंतर है। मगर बावजूद इसके यह मतदान का प्रतिशत काफी अच्छा है।

रतलाम-झाबुआ लोकसभा सीट पर रतलाम क्षेत्र की भूमिका की अगर बात की जाए तो इस क्षेत्र में सामान्य मतदाताओं की संख्या अधिक है और रतलाम क्षेत्र व्यापारिक हब से भी जाना जाता है। यानि यहां की राजनीति का भविष्य तय करने में व्यापारी वर्ग की भी अहम भूमिका होती है। इस संसदीय सीट पर लगभग सभी विधानसभाओं में मतदान प्रतिशत घटा ही है।

मतदान के इस आंकड़े को लेकर भाजपाई यह दावा कर रहे है कि, रतलाम क्षेत्र में हुआ मतदान भाजपा के पक्ष का होता है। लेकिन कांग्रेस इसे दूसरे नजरिये से देखते हुए यह कह रही है कि, मतदान का यह प्रतिशत लोगों में सत्ता को लेकर नाराजगी दर्शा रहा है। इसीलिए दोनों ही दल अपने-अपने जीत के दावे कर रहे है। मगर देखा जाए तो रतलाम क्षेत्र की सैलाना विधानसभा ने पिछले विधानसभा में अपने लिए तीसरा विकल्प चुन लिया था। वहीं रतलाम शहर और ग्रामीण में विधानसभा का मतदान भाजपा के पक्ष में देखा गया था। यही वह वजह है जो भाजपाई लोकसभा चुनावों में हुए मतदान के आंकड़े को अपने पक्ष में बता रहे है। हालांकि इस संसदीय क्षेत्र में 8 विधानसभाएं आती है और इनमें से 4 पर भाजपा काबिज है, तो 3 पर कांग्रेस तथा एक पर निर्दलीय का कब्जा है।

कांग्रेसी दावों में इस क्षेत्र को लेकर कोई टीका-टिप्पणी नहीं है, हालांकि सैलाना विधानसभा कांग्रेस में कांग्रेस की मजबूत पकड़ हमेशा रही है। मगर इस लोकसभा चुनाव में इस बार कांग्रेस, झाबुआ-आलीराजपुर पर ज्यादा फोकस करती दिखाई दी है। कांग्रेसी दावे भी यही बता रहे है कि, हम इस बार झाबुआ व आलीराजपुर जिले से बड़ी लीड ले रहे है।

कुल मिलाकर लोकसभा 2024 के रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट के मतदान प्रतिशत के आंकड़े ने राजनीतिक दलों के अच्छे खासे गणित बिगाड़ दिए है। सबके अपने-अपने दावे है, लेकिन हथपल्ले अब तक कुछ भी नहीं है। 4 जून को ईवीएम का पिटारा खुलेगा और आने वाले लोकसभा चुनावों के नतीजे यह तय करेंगे कि, कौन जीतता है और कौन हारता है।

क्या हार के साथ होगी कांतिलाल भूरिया की बिदाई? या फिर राजयोग एक बार फिर देगा कांतिलाल का साथ

पिछली बार भाजपा के कब्जे मे गई थी रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट

माही की गूंज, झाबुआ।

कहने को तो रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट कांग्रेस की परम्परागत सीट रही है, लेकिन पिछले वर्षों में भाजपा ने यहां सेंधमारी कर दी है। कांग्रेस को यहां दो बार भाजपा झटके दे चुकी है। पहली बार 2014 में कांग्रेस से बगावत स्वर्गीय दिलीपसिंह भाजपा में आए और मोदी लहर के साथ संसदीय क्षेत्र में भाजपा को विजयी श्री दिलाई। मगर इसके कुछ ही समय बाद दिलीपसिंह भूरिया का स्वर्गवास हो गया और महज छः महीने बाद हुए उपचुनाव में उनकी पुत्री निर्मला भूरिया को हार का मुंह देखना पड़ा और कांतिलाल फिर एक बार विजयी होकर संसदीय सीट को कांग्रेस के खाते में ले जाने में कामयाब रहे कांतिलाल की उक्त जीत के बाद उनका राजयोग होना बताया गया। 2019 में एक बार फिर लोकसभा चुनावों में भाजपा ने झाबुआ विधायक रहे गुमानसिंह डामोर के जरिए इस लोकसभा सीट पर कब्जा किया। कांतिलाल हारे मगर गुमानसिंह के लोकसभा चुनाव लड़ने से खाली हुई विधानसभा सीट पर कांतिलाल ने अपना कब्जा जमाया और विधायक के रूप में भोपाल पहुंच गए।

इस 2024 लोकसभा चुनाव में मतदान का आंकड़ा लगभग 2019 जैसा ही दिखाई पड़ रहा है और वर्तमान स्थिति ईवीएम में बंद है। 4 जून को इसका फैसला होगा कि यह सीट किसके खाते में जाती है।

इस बार 2024 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर कांतिलाल भूरिया की शाख दाव पर है। अपनी पराम्परागत सीट को बचाने के लिए कांतिलाल भूरिया ने सहानुभूति का कार्ड खेला है। उन्होने इस लोकसभा चुनाव को अपना आखिरी चुनाव बताया है। मगर यह कोई नहीं जानता कि कांतिलाल भूरिया के इस आखरी चुनाव के परिणाम क्या होंगे? क्या हार के साथ कांतिलाल भूरिया की बिदाई होगी? या एक बार फिर उनका राजयोग उन्हे इस संसदीय सीट पर सिरमौर करेगा।

वैसे देखा जाए तो राजनीतिक विशेषज्ञों के विश्लेषण काफी कुछ कह रहे है। चूंकि मतदान प्रतिशत लगभग 2019 जैसा ही दिखाई पड़ रहा है, इससे यह भी माना जा रहा है कि, इस बार फिर से भाजपा इस संसदीय सीट पर काबिज होगी। विशेषज्ञों के अनुसार यह माना जा रहा है कि, रतलाम शहर व ग्रामीण में होने वाला अधिक मतदान भाजपा के पक्ष में होगा। इस संसदीय सीट पर यही वह जगह है जहां से भाजपा को बढ़त मिलने के आसार नजर आ रहे है। इसके विपरीत कांतिलाल भूरिया ने इस बार अपनी पूरी ताकत अपनी बेटे डॉ. विक्रांत भूरिया के साथ झाबुआ-आलीराजपुर जिले में झोंक दी है। यहीं से कांग्रेस बड़ी लीड का दावा भी कर रही है, लेकिन विशेषज्ञों का यह मानना है कि, जो लीड कांतिलाल झाबुआ-आलीराजपुर से लेंगे वह रतलाम शहर व ग्रामीण में जाकर बराबर हो जाएगी या उससे आगे निकल जाएगी। कुल मिलाकर भाजपा को जो नुकसान झाबुआ-आलीराजपुर में होगा वह रतलाम शहर व ग्रामीण विधानसभा से पूरा हो जाएगा। मगर रतलाम एक व्यापारिक क्षेत्र है और यह माना जा रहा है कि, व्यापारियों में सत्तापक्ष से काफी नाराजगी देखी जा रही है। इसको लेकर राजनितिक पंडितो का कहना है कि, 20 प्रतिशत व्यापारी वर्ग का आंकड़ा मान रहे है जो सत्ता या भाजपा के खिलाफ जा सकता है।

हालांकि देखा जाए तो इस बार इस रतलाम-झाबुआ संसदीय सीट पर कांतिलाल कांग्रेस के भरोसे ना होकर खुद अपने दम पर चुनाव लड़े है, ऐसा क्यों है...? इसके पीछे भी एक लंबी कहानी है, मगर चुनावी समीकरण और स्थितियों को देखते हुए तो यही लग रहा है कि, कांतिलाल इस बार खुद अपने दम पर मैदान में है। इस संसदीय सीट पर कांतिलाल भूरिया का अपना लम्बा अनुभव है और वे इस संसदीय क्षेत्र के चप्पे-चप्पे से वाकिफ भी है। इसका फायदा उन्हे जरूर मिल सकता है। वैसे देखा जाए तो कांतिलाल भूरिया के पूरे राजनीतिक जीवन में राजयोग का बड़ा साथ उन्हे मिलता रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भी वे संसदीय सीट पर काबिज रहे है। चुनाव हारे भी है तो बहुत ही कम समय में वे किसी न किसी तरह वापस कुर्सी पर जा बैठते है। लोकसभा नही तो विधानसभा और विधानसभा नहीं तो लोकसभा वे कहीं न कहीं कुर्सी पर ही नजर आते रहे है। चाहे सरकारें जिसकी भी रही हो।

हालांकि इस संसदीय सीट पर कांतिलाल को हारा हुआ देखना जल्दबाजी होगी, लेकिन इस लोकसभा चुनाव में उनके प्रचार में कई कमियां देखी गई है। इस संसदीय सीट के कुछ इलाके ऐसे भी है जहां कांतिलाल भूरिया खुद नही पहुंच पाए है। उनकी जगह या तो उनके बेटे ने ली है या फिर उनकी पत्नी ने। ऐसे में उन क्षेत्रों के समीकरण क्या होंगे जहां कांतिलाल नहीं पहुंच पाए है, कहना मुश्किल है। इसके अलावा एक बात यह भी देखने में आ रही है कि, कांतिलाल भूरिया ने इस लोकसभा चुनाव में खर्च के मामले में थोड़ी ज्यादा ही कंजूसी बरती है। इसके अलावा रतलाम शहर व रतलाम ग्रामीण विधानसभाओं में भी कम ही फोकस दिखाई दिया है। जमीनी स्तर से कांग्रेस यहां न के बराबर प्रचार करती दिखी है। अंदरखाने के अगर कोई गणित हो तो वह नहीं पता, लेकिन रतलाम क्षेत्र में कांग्रेस को कमजोर ही माना जा रहा है। मगर यह कह पाना मुश्किल है कि 4 जून को आने वाले परिणाम क्या कहानी लिखेंगे।

रतलाम जिले की सैलाना विधानसभा में इस बार बंपर वोटिंग देखने को मिली है। हालांकि सैलाना विधानसभा भी कांग्रेस की ही मानी जाती है, लेकिन पिछले विधानसभा चुनावों में जयस के कमलेश्वर डोडियार ने सभी राजनीतिक दलों को धत्ता बताकर निर्दलीय के रूप में एक बड़ी जीत दर्ज की थी। हालांकि यहां कांग्रेस को बड़ा फायदा हो सकता है, क्योंकि कमलेश्वर डोडियार जो सैलाना विधायक है वे अपने प्रचार में हमेशा ही भाजपा को वोट ना देने की अपील करते आए है। इस संसदीय सीट पर बाप पार्टी ने भी अपना उम्मीदवार उतारा है, माना यह जाता है कि, जयस और बाप पार्टी एक ही है। ऐसे में कमलेश्वर डोडियार अगर बाप पार्टी का समर्थन करते है तो फिर कांतिलाल भूरिया की हार इस संसदीय सीट पर तय है। मगर जिस तरह से इस लोकसभा चुनाव में कमलेष्वर डोडियार का रवैया सामने आया है वह अलग ही खेल की तरफ इशारा कर रहा है। कहा यह भी जाता है कि, जयस और कांग्रेस एक ही है। इस लोकसभा चुनाव में कमलेश्वर डोडियार पूरी तरह से निष्क्रीय नजर आए है, जिसको लेकर बाप पार्टी ने उन्हे नोटिस भी जारी किया है। मगर कमलेश्वर डोडियार की इस लोकसभा चुनावों में चुप्पी कई मायनों में देखी जा रही है। अगर अंदरखाने कमलेष्वर डोडियार ने कांतिलाल को समर्थन दे दिया तो फिर परिणाम बिल्कुल उलट होंगे।

कांतिलाल भूरिया की पृष्ठभूमि को अगर देखा जाए तो रतलाम संसदीय क्षेत्र में उनका अपना एक अलग ही अंदाज और क्षवि है। वे आदिवासियों के नेता जरूर है लेकिन सामान्य वर्ग को भी अपने साथ लेकर चलते है। उनकी राजनीति अब तक साफ क्षवि की रही है। किसी तरह के कोई गंभीर आरोप या अपराध उनके खिलाफ अब तक नजर नहीं आया है। लेकिन यह माना जा रहा है कि, इस संसदीय सीट पर कांतिलाल ही कांग्रेस है और कांग्रेस ही कांतिलाल है, लेकिन कांतिलाल को अगर देखा जाए तो वे यहां कांग्रेस से उपर है। आमजन भले कांग्रेस को पसंद ना करे लेकिन कांतिलाल भूरिया के व्यवहार और सरलता को पसंद करता है। यही कारण है कि वे राजनीति में एक लंबे समय से सक्रिय है।

यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि अगर कांतिलाल इस संसदीय सीट पर हारते है तो यह कांग्रेस की हार होगी और अगर जीतते है तो फिर यह सिर्फ कांतिलाल भूरिया की ही जीत मानी जाएगी। ऐसा कहना इसलिए भी गलत नहीं होगा क्योंकि कांतिलाल भूरिया के राजयोग बहुत ज्यादा प्रबल है और इसके परिणाम यह संसदीय क्षेत्र हमेशा से देखता आया है। बावजूद इसके हार जीत का आंकलन करना जल्द बाजी ही होगा। 4 जून को आने वाले चुनावी परिणाम ही तय करेंगे कि उंट किस करवट बैठता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422